ज्ञान की गहराई समझाते

अव्यक्त बापदादा

ज्ञान की गहराई समझाते
अव्यक्त बापदादा

Question? Answer

प्रश्न–उत्तर

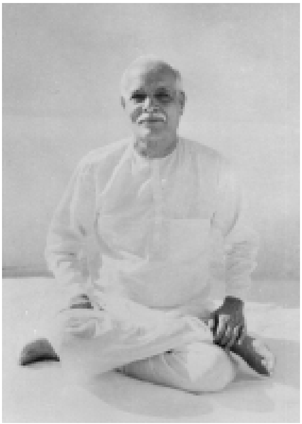

प्रश्न-उत्तर

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कईं वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से '**प्रश्न–उत्तर**' एक है।

प्रश्नः- पाठशाला का पहला पाठ क्या है?

उत्तरः- अपने को मरजीवा बनाना मरजीवा अर्थात् अपने देह से, मित्र सम्ब-न्धियों से, पुरानी दुनिया से मरजीवा। यह पहला पाठ पक्का किया है? (संस्कार से मरजीवा नहीं हुए हैं) जब कोई मर जाता है तो पिछले संस्कार भी खत्म हो जाते हैं। तो यहाँ भी पिछले संस्कार क्यों याद आना चाहिए! जबकि जन्म ही दूसरा; तो पिछली बातें भी खत्म होनी चाहिए। यह पहला पाठ है मरजीवा बनने का। वह पक्का करना है। पिछले पुराने संस्कार ऐसे लगने चाहिए जैसे और कोई के थे। हमारे नहीं। पहले शूद्रों के थे, अभी ब्राह्मणों के हैं। तो पुराने शूद्रों के संस्कार नहीं होने चाहिए। पराये संस्कार अपने क्यों बनाते हो। जो पराई चीज़ को अपना बनाते हैं उनको क्या कहेंगे? चोर। तो यह भी चोरी क्यों करते हो? यह तो - शूद्रों के संस्कार है, ब्राह्मणों के नहीं। शूद्र की चीज़ को ब्राह्मण स्वीकार क्यों करते हैं! अछूत के साथ कपड़ा भी लग जाये तो नहाते हैं। तो शूद्रपने का संस्कार ब्राह्मणों को लग जाये तो क्या करना चाहिए? उसके लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। जैसे गन्दी चीज़ को नहीं छूते हैं, वैसे पुराने संस्कारों से बचना है। छूना नहीं है। इतना जब ध्यान रखेंगे तो औरों को भी ध्यान दिला सकेंगे।

(18.06.1969)

प्रश्नः- सर्विस की सफलता का मुख्य गुण कौन सा है?

उत्तरः- नम्रता। जितनी नम्रता उतनी सफलता। नम्रता आती है निमित्त समझने से। निमित्त समझकर सर्विस करना। नम्रता के गुण से सब आप के आगे नमन करेंगे। जो खुद झुकता है उसके आगे सभी झुकते हैं। निमित्त समझकर कार्य करना है। जैसे बाप शरीर का आधार निमित्त मात्र लेते हैं, वैसे आप समझो कि निमित्त-मात्र शरीर का आधार लिया है। एक तो शरीर को निमित्त-मात्र समझना है और दूसरा सर्विस में अपने को निमित्त समझना, तब नम्रता आयेगी। फिर देखो, सफलता आप के आगे चलेगी। जैसे बापदादा टेम्प्रेरी देह में आते हैं, ऐसे देह को निमित्त आधार

समझो। बापदादा की देह में अटेचमेन्ट होती है क्या? आधार समझने से अधीन नहीं होंगे। अभी देह के अधीन होते हो, फिर देह को अधीन करेंगे।

(18.06.1969)

प्रश्नः- गायन है-दृष्टि से सृष्टि बनती है। कौन सी सृष्टि बनती है और कब बनती है?

उत्तरः- दृष्टि और सृष्टि का ही गायन क्यों है, मुख का गायन क्यों नहीं है? संगम पर पहले-पहले क्या बदली करते हैं? पहला पाठ क्या पढ़ाते हैं? भाई-भाई की दृष्टि से देखो। भाई-भाई की दृष्टि अर्थात् पहले दृष्टि को बदलने से सब बातें बदल जाती हैं। इसलिए गायन है कि दृष्टि से सृष्टि बनती है। जब आत्मा को देखते हैं तब यह सृष्टि पुरानी देखने में आती है। पुरुषार्थ भी मुख्य इस चीज का ही है -दृष्टि बदलने का। जब यह दृष्टि बदल जाती है तो स्थिति और परिस्थिति भी बदल जाती है। दृष्टि बदलने से गुण और कर्म आप ही बदल जाते हैं। यह आत्मिक दृष्टि नैचुरल हो जाये।

(18.06.1969)

प्रश्नः- राज्यपद का आधार क्या है?

उत्तरः- जो संगमयुग पर अपना राजा बनता है वह प्रजा का भी राजा बन सकता है। जो यहाँ अपना राजा नहीं वह वहाँ प्रजा का राजा भी नहीं बन सकता। संगमयुग पर ही सभी संस्कारों का बीज पड़ता है। यहाँ के बीज के सिवाए भविष्य का वृक्ष पैदा हो नहीं सकता है। यहाँ बीज न डालेंगे तो फूल कहाँ से निकलेगा ! यहाँ अपना राजा बनने से क्या होगा? अपने को अधिकारी समझेंगे। अधिकारी बनने के लिए उदारचित्त का विशेष गुण चाहिए। जितना उदारचित्त होंगे उतना अधिकारी बनेंगे।

(18.06.1969)

प्रश्नः- फर्स्ट नम्बर के लिए क्या करना पड़ता है?

उत्तरः- फर्स्ट नम्बर लेने के लिए विशेष फास्ट रखना पड़ता है। फास्ट के दो अर्थ होते हैं। एक फास्ट व्रत को भी कहा जाता है। तो विशेष कौनसा व्रत रखना है? (पवित्रता का) यह व्रत तो कामन है। यह व्रत तो सभी रखते हैं। फर्स्ट आने के लिए विशेष व्रत रखना है कि एक बाप दूसरा न कोई। हर बात में एक की ही स्मृति आये। जब यह फास्ट रखेंगे तो फर्स्ट आ जायेंगे। दूसरा फास्ट-जल्दी चलने को भी कहा जाता है अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ।

महारथी उसको कहा जाता है जो सदैव माया पर विजय प्राप्त करे। माया को सदा के लिए विदाई दे दे। विघ्नों को हटाने की पूरी नालेज है? सर्वशक्तिमान के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान हो। तो नालेज के आधार पर विघ्न हटा-कर सदैव मगन अवस्था रहे। अगर विघ्न हटते नहीं हैं तो जरूर शक्ति प्राप्त करने में कमी है। नालेज ली है लेकिन उसको समाया नहीं है। नालेज को समाना अर्थात् स्वरूप बनना। जब समझ से कर्म होगा तो उसका फल सफलता अवश्य निकलेगी।

(29.05.1970)

प्रश्नः- तीव्र पुरुषार्थी के क्या लक्षण होते हैं?

उत्तरः- समझाया था ना कि फरमान बरदार किसको कहा जाता है? जिसका संकल्प भी बिगर फरमान के नहीं चलता। ऐसे फरमानबरदार को ही तीव्र पुरुषार्थी कहा जाता है। सर्वशक्तिमान बाप के बच्चे जो शक्तिवान हैं, उन्हों के आगे माया भी दूर से ही सलाम कर विदाई ले लेती है। वल्लभाचारी लोग अपने शिष्यों को छूने भी नहीं देते हैं। अछूत अगर छू लेता है तो स्नान किया जाता है। यहाँ भी ज्ञान स्नान कर ऐसी शक्ति धारण करो जो अछूत नजदीक न आयें। माया भी क्या है? अछूत।

(29.05.1970)

प्रश्नः- बन्धन से मुक्त होने की युक्ति क्या है?

उत्तरः- जितना-जितना अपने को सर्विस के बन्धन में बांधते जायेंगे तो दूसरे बन्धन छूटते जायेंगे। आप ऐसे नहीं सोचो कि यह बन्धन छूटे तो सर्विस में लग जायें। ऐसे नहीं होगा। सर्विस करते रहो। बन्धन होते हुए भी अपने को सर्विस के बन्धन में जोड़ते जाओ। यह जोड़ना ही तोड़ना है। तोड़ने के बाद जोड़ना नहीं होता है। जितना जोड़ेंगे उतना ही टूटेगा। जितना अपने को सर्विस में सहयोगी बनायेंगे उतना ही प्रजा आपकी सहयोगी बनेगी। कोई भी कारण है तो उनको हल्का छोड़कर पहले सर्विस के मौके को आगे रखो। कर्तव्य को पहले रखना होता है। कारण होते रहेंगे। लेकिन कर्तव्य के बल से कारण ढ़ीले पड़ जायेंगे।

(07.06.1970)

प्रश्नः- अव्यक्त स्थिति का अनुभव को कैसे बढ़ायें?

उत्तरः- एक सेकेण्ड भी अव्यक्त स्थिति का अनुभव होता है तो उसका असर काफी समय तक रहता है। अव्यक्त स्थिति का अनुभव पावरफुल होता है। जितना हो सके उतना अपना समय व्यक्तभाव से हटाकर अव्यक्त स्थिति में रहना है। अव्यक्त स्थिति से सर्व संकल्प सिद्ध हो जाते हैं। इसमें मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होती है। और व्यक्त स्थिति में स्थित होकर पुरुषार्थ करने में मेहनत अधिक और प्राप्ति कम होती है। फिर चलते-चलते उलझन और निराशा आती है। इसलिए अव्यक्त स्थिति से सर्व प्राप्ति का अनुभव बढ़ाओ। अव्यक्तमूर्त को सामने देख समान बनने का प्रयत्न करना है। जैसा बाप वैसे बच्चे। यह सलोगन याद रखो। अन्तर न हो। अन्तर को अन्तर्मुख होकर मिटाना है। बाप कब निराश होते हैं? परिस्थितियों से घबराते हैं? तो बच्चे फिर क्यों घबराते हैं? ज्यादा परिस्थितियों को सामना करने का साकार सबूत भी देखा। कभी उनका घबराहट का रूप देखा? सुनाया था ना कि सदैव यह याद रखो कि स्नेह में सम्पूर्ण होना है। कोई मुश्किल नहीं है। स्नेही को सुध-बुध रहती है? जब अपने आप को मिटा ही दिया

फिर यह मुश्किल क्यों? मिटा दिया ना। जो मिट जाते हैं वह जल जाते हैं। जितना अपने को मिटाना उतना ही अव्यक्त रूप से मिलना। मिटना कम तो मिलना भी कम। अगर मेले में भी कोई मिलन न मनाये तो मेला समाप्त हो जायेगा फिर कब मिलन होगा? स्नेह को समानता में बदली करना है। स्नेह को गुप्त और समानता को प्रत्यक्ष करो। सभी समाया हुआ है सिर्फ प्रत्यक्ष करना है। अपने कल्प पहले के समाये हुए संस्कारों को प्रत्यक्ष करना है। कल्प पहले की अपनी सफलता का स्वरूप याद आता है ना। अभी सिर्फ समाये हुए को प्रैक्टिकल प्रत्यक्ष रूप में लाओ। सदैव अपनी सम्पूर्णता का स्वरूप और भविष्य 21 जन्मों का रूप सामने रखना है। कई लोग अपने घर को सजाने के लिए अपने बचपन से लेकर, अपने भिन्न-भिन्न रूपों का यादगार रखते हैं। तो आप अपने मन मन्दिर में अपने सम्पूर्ण स्वरूप की मूर्ति, भविष्य के अनेक जन्मों की मूर्तियां स्पष्ट रूप में सामने रखो। फिर और कोई तरफ संकल्प नहीं जायेगा।

(07.06.1970)

प्रश्नः- समीप रत्न के लक्षण क्या हैं?

उत्तरः- जो जितना जिसके समीप होते है उतना संस्कारों में भी समानता होती है। तो बापदादा के समीप अर्थात् लक्षण के नजदीक आओ। जितना चेक करेंगे उतना जल्दी चेन्ज होंगे। आदि स्वरूप को स्मृति में रखो। सतयुग आदि का और मरजीवा जीवन के आदि रूप को स्मृति में रखने से मध्य समा जायेगा।

स्नेही हो वा सहयोगी भी हो? जिससे स्नेह होता है उनको रिटर्न में क्या दिया जाता है? स्नेह का रिटर्न है सहयोग। वह कब देंगे? जैसे बाप सर्व समर्थ है तो बच्चों को भी मास्टर सर्व समर्थ बनना है। विनाश के पहले अगर स्नेह के साथ सहयोगी बनेंगे तो वर्से के अधिकारी बनेंगे। विनाश के समय भल सभी आत्मायें पहचान लेंगी लेकिन वर्सा नहीं पा सकेंगी क्योंकि सहयोगी नहीं बन सकेंगी।

(07.06.1970)

प्रश्नः- कर्म बन्धन से मुक्त कैसे बनें?

उत्तरः- कर्म बन्धन शक्तिशाली है या यह ईश्वरीय बन्धन? ईश्वरीय बन्धनों को अगर तेज करो तो कर्म बन्धन आपे ही ढीले हो जायेंगे। बन्धन से ही बन्धन कटता है। जितना ईश्वरीय बन्धन में बंधेंगे उतना कर्मबन्धन से छूटेंगे। जितना वह कर्मबन्धन पक्का है उतना ही यह ईश्वरीय बन्धन को भी पक्का करो तो वह बन्धन जल्दी कटेगा।

(07.06.1970)

प्रश्नः- बिन्दु रूप स्थिति बनाने के लिए क्या करें?

उत्तरः- बिन्दु रूप में अगर ज्यादा नहीं टिक सकते तो इसके पीछे समय न गंवाओ। बिन्दी रूप में तब टिक सकेंगे जब पहले शुद्ध संकल्प का अभ्यास होगा। अशुद्ध संकल्पों को शुद्ध संकल्पों से हटाओ। जैसे कोई एक्सीडेन्ट होने वाला होता है। ब्रेक नहीं लगती तो मोड़ना होता है। बिन्दी रुप है ब्रेक। अगर वह नहीं लगता तो व्यर्थ संकल्पों से बुद्धि को मोड़कर शुद्ध संकल्पों में लगाओ। कभी-कभी ऐसा मौका होता है जब बचाव के लिए ब्रेक नहीं लगाई जाती है, मोड़ना होता है। कोशिश करो कि सारा दिन शुद्ध संकल्पों के सिवाय कोई व्यर्थ संकल्प न चले। जब यह सब्जेक्ट पास करेंगे तो फिर बिन्दी रूप की स्थिति सहज रहेगी।

(07.06.1970)

प्रश्नः- ईविल स्पिट्स का रुप कौन सा है?

उत्तरः- उनका स्पष्ट रूप है किन्हीं आत्माओं में प्रवेश होना। लेकिन ईविल स्प्रिटस का कुछ गुप्त रुप भी होता है। चलते-चलते कोई में विशेष कोई न कोई बुरा संस्कार बिल्कुल प्रभावशाली रुप में देखने में आयेगा। जिसका इफेक्ट क्या होगा कि उनका दिमाग अभी-अभी एक बात, अभी अभी दूसरी बात। वह भी फोर्स से कहेंगे। उनकी स्थिति भी एक ठिकाने टिकी हुई नहीं होगी। वह अपने को भी

परेशान करते हैं, दूसरों को भी परेशान करेंगे। स्पष्ट रुप में जो ईविल स्प्रिट आती हैं उसको परख कर और उससे किनारा करना सहज है। लेकिन आप लोगों के सामने स्पष्ट रुप में कम आयेगी। गुप्त रूप में बहुत आयेगी। जिसको आप लोग साधारण शब्दों में कहते हो कि पता नहीं उनका दिमाग कुछ पागल सा लगता है। लेकिन उस समय उसमें यह ईविल अर्थात बुरे संस्कारों का फोर्स इतना होता है जो वह ईविल स्प्रिट के समान ही होती है। जैसे वह बहुत तंग करते हैं वैसे यह भी बहुत तंग करते हैं। यह बहुत होने वाला है। इसलिए सुनाया कि अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, अपनी शक्ति की बचत यह योजना बनाकर बीच-बीच में उस बिन्दी रूप की स्थिति को बढ़ाओ। जितना बिन्दी रुप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्प्रिट वा ईविल संस्कार का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा। और आप लोगों का शक्तिरुप ही उन्हों को मुक्त करेगा। यह भी सर्विस करनी है। ईविल स्प्रिट को भी मुक्त करना है क्योंकि अभी अन्त के समय का भी अन्त है तो ईविल स्प्रिट वा ईविल संस्कारों को भी अति में जाकर फिर उन्हों का अन्त होगा। किचड़ा सारा बाहर निकल कर भस्म हो जायेगा। इसलिए उन्हों का सामना करने के लिए अगर अपनी समस्याओं से ही मुक्त नहीं हुए होंगे तो इन समस्याओं से कैसे सामना कर सकेंगे। इसलिए कहते हैं बचत की स्कीम बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ तब अपना और सर्व आत्माओं का बचाव कर सकेंगे। सिर्फ भाषण करने वा समझाने की सर्विस नहीं, अब तो सर्विस का रुप भी बड़ा सूक्ष्म होता जायेगा। इसलिए अपने सूक्ष्म स्वरूप की स्थिति भी बढ़ाओ। यह सभी प्रत्यक्ष होकर फिर प्राय: लोप होना है। प्राय: लोप होने पहले प्रत्यक्ष हो फिर प्राय:लोप होंगे। सर्विस इतनी बढ़नी है जो एक-एक को दस का कार्य करना पड़ेगा।

(24.07.1970)

प्रश्न:- बालक बनना अच्छा है या मालिक बनना अच्छा है?

उत्तर:- जितना हो सके सर्विस के सम्बन्ध में बालकपन, अपने पुरुषार्थ की स्थिति

में मालिकपन। सम्पर्क और सर्विस में बालकपन, याद की यात्रा और मंथन करने में मालिकपन। साथियों और संगठन में बालकपन और व्यक्तिगत में मालिकपन - यह है युक्तियुक्त चलना।

(21.01.1971)

प्रश्नः- सदा उमंग हुल्लास में एकरस रहने के लिए कौन सी पॉइन्ट याद रहे?

उत्तरः- उसके लिए जो सदैव सम्बन्ध में आते - चाहे स्टूडेन्ट, चाहे साथी सभी को सन्तुष्ट करने की उत्कंठा हो। उत्साह में रहने से जो ईश्वरीय उमंग उत्साह है वह सदा एकरस रहेगा। जिसको देखो उससे हर समय गुण उठाते रहो। सर्व के गुणों का बल मिलने से सदाकाल के लिए उत्साह रहेगा। उत्साह कम होने का कारण औरों के भिन्न-भिन्न स्वरूप, भिन्न-भिन्न बातें देखना, सुनना, गुण देखने की उत्कण्ठा हो तो एकरस उत्साह रहे। गुण चोर होने से और चोर भाग जायेंगे। सर्व पर विजयी बनने की युक्ति क्या है? विजयी बनने के लिए हरेक के दिल के राज़ को जानना है। जब हरेक के मुख के आवाज़ को देखते हो, तो आवाज़ देखने से उनके दिल के राज़ को नहीं जान सकते। दिल के राज़ को जानने से सर्व के दिलों के विजयी बन सकते हो। दिल के राज़ को जानने के लिए अन्तर्मुखता चाहिए। जितना राज़ को जानेंगे उतना सर्व को राज़ी कर सकेंगे। जितना राज़ी करेंगे उतना राज़ को जानेंगे। तब विजयी बन सकेंगे।

(21.01.1971)

प्रश्नः- सरलचित्त की निशानी क्या है?

उत्तरः- जो स्वयं सरलचित्त रहता है वह दूसरों को भी सरलचित्त बना सकता है। सरलचित्त माना जो बात सुनी, देखी, की, वह सार-युक्त हो और सार को ही उठाये और जो बात वा कर्म स्वयं करे उसमें भी सार भरा हुआ हो। तो पुरुषार्थ भी सरल होगा और जो सरल पुरुषार्थी होता है वह औरों को भी सरल पुरुषार्थी बना

देता है। सरल पुरुषार्थी सब बातों में आलराउन्ड होगा। कोई भी बत की कमी दिखाई नहीं देगी। कोई भी बात में हिम्मत कम नहीं होगी। मुख से ऐसा बोल नहीं निकलेगा कि यह अभी नहीं कर सकते हैं। यह एक मुख्य अभ्यास प्रैक्टिकल में लाने से सब बातों में सैम्पुल बन सकते हैं। सर्व बातों में सैम्पुल बनने से पास विद् आनर बन सकते हैं। ऐसा कभी कोई बात में कहते हो, अभ्यास नहीं है। आलराउन्ड बनना दूसरी बात है, यह हुई कमाई। आलराउन्ड एग्ज़ैम्पुल बनना दूसरी बात है। हर बात अन्य के आगे सैम्पुल बनकर दिखाना। हर बात में कदम आगे बढ़ाना अपने द्वारा सभी को कमाई में हुल्लास दिलाना - यह है आलराउन्ड एग्जैम्पुल बनना।

(21.01.1971)

प्रश्नः-(कोई बांधेली ने पूछा) बाबा हम बांधेली हैं, हमको संकल्प चलता है कि हम सर्विस नहीं करती हैं?)

उत्तरः- बांधेली स्वतन्त्र रहने वालों से अच्छी हैं। स्वतन्त्र अलबेले रहते हैं। बांधेली की लगन अच्छी रहती है। याद को पावरफुल बनाओ। याद कम होगी तो शक्ति नहीं मिलेगी। याद में रहते यह व्यर्थ न सोचो कि सर्विस नहीं करती। उस समय भी याद में रहो तो कमाई जमा होगी। यह सोचने से याद की पावर कम होगी। बन्धन से मुक्त करने के लिए अपनी चलन को चेन्ज करो। जो घर वाले देखें कि यह चेन्ज हो गई है। जो कड़ा संस्कार है वह चेन्ज करो। वह अपना काम करें आप अपना काम करो। उनके काम को देख घबराओ नहीं। जितना वो अपना काम फोर्स से कर रहे हैं, आप अपना फोर्स से करो। उनके गुण उठाओ कि वह कैसे अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं, आप भी करो। सारी सृष्टि की आत्माओं की भेंट में कितनी आत्माओं को यह भाग्य प्राप्त हुआ हैं। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। खुशी तो नयनों में, मस्तक में, होठों में झलकती रहनी चाहिए। जो है ही खुशी के खज़ाने का मालिक, उसके बालक हों। तो खज़ाने के अधिकारी तो हो ना। 5 हजार वर्ष पहले

भी आये थे, यह अनुभव है? स्मृति आती है? स्पष्ट स्मृति की निशानी क्या है? स्पष्ट स्मृति की निशानी यह है - कि किससे मिलेंगे तो अपनापन महसूस होगा और अपने स्थान पर पहुँच गया हूँ, यह वही स्थान है, जिसको ढूंढ़ रहा था। जैसे कोई चीज़ ढूंढ़ने के बाद मिलती है, इस रीति से यह भासना आये कि असली परिवार से मिले हैं और अपनापन का अनुभव हो। इसको कहते हैं स्पष्ट अनुभव। दूसरी बात कि जो बात सुनेगा वह उनको सहज स्पष्ट समझ में आयेगी। जैसे पवित्रता की बात लोगों को मुश्किल लगती है परन्तु जो कल्प पहले वाले होंगे, अधिकारी वह तो समझते हैं कि हमारा स्वधर्म ही है। उनको सहज लगेगा। जैसे कोई जानी-पहचानी मूर्तियाँ होती हैं उनको देखने से ऐसा अनुभव होता है कि यह तो अपने हैं। जितना समीप सम्बन्ध में आने वाले होंगे वह स्पष्ट अनुभव करेंगे। ऐसी अनुभवी आत्माओं को कर्मबन्धन तोड़ने में देरी नहीं लगेगी। नकली चीज़ को छोड़ना मुश्किल नहीं होता है। अच्छा -

(21.01.1971)

प्रश्नः- सच किसको कहा जाता है?
उत्तरः- जो बात अगर संकल्प में भी आती हो, संकल्प को भी छिपाना नहीं है- इसको कहा जाता है सच। अगर पुरुषार्थ कर सफलता भी लेती हो तो भी अपनी सफलता वा हार खाने का दोनों का समाचार स्पष्ट सुनाना। यह है सच। सच वाले अपने वायदे पूरा कर सकेंगे।

(09.04.1971)

प्रश्नः- विजयी बनने के लिये कौनसी मुख्य धारणा की आवश्यकता है?
उत्तरः- विजयी बनने के लिये अलर्ट रहने की आवश्यकता है। एक होते हैं अलर्ट रहने वाले, दूसरे होते हैं अलबेले रहने वाले। जो सदा अलर्ट होते हैं, वे कभी माया

से धोखा नहीं खायेंगे, बल्कि वे सदा विजयी ही होंगे।

(11.10.1975)

प्रश्नः- 108 की माला में और 16000 की माला में आने के चिह्न व निशानी क्या है?

उत्तरः- जो यहाँ सदा विजयी रहते हैं, वही विजय माला में आयेंगे। इसलिए वैजयन्ती माला नाम पड़ा है। जो कभी-कभी के विजयी हैं वे 16000 की माला में आयेंगे।

(11.10.1975)

प्रश्नः- कौनसा लक्ष्य रखने से सदा विजयी बन सकते हैं?

उत्तरः- हम अभी के विजयी नहीं, कल्प-कल्प अनेक बार के विजयी हैं। जो बात अनेक बार की जाती है, तो वह स्वभाव-संस्कार में स्वतः ही आ जाती है। जैसे आज की दुनिया में जो बात नहीं करनी चाहिये परन्तु वह कर लेते हैं, तो कह देते हैं कि यह तो मेरा संस्कार बन गया है। तो यहाँ भी अनेक बार के विजयी होने की 'स्मृति विजय का संस्कार बना' देगी।

(11.10.1975)

प्रश्नः- व्यर्थ को समर्थ बनाने की तेज मशीनरी कौन-सी होनी चाहिए?

उत्तरः- जैसे कोई भी चीज की मशीनरी पॉवरफुल होती है, तो काम तेजी से होता है, तो यहाँ भी व्यर्थ संकल्प को समर्थ करने के लिए बुद्धि रूपी मशीनरी पॉवरफुल हो। बुद्धि भी पॉवरफुल तब होगी जब बुद्धि का पॉवर हाउस से कनेक्शन होगा। यहाँ कनेक्शन टूटता तो नहीं लेकिन लूज़ ज़रूर हो जाता है, अतः अब वह भी लूज़ नहीं होना चाहिए। तभी व्यर्थ को समर्थ बना सकेंगे।

(11.10.1975)

प्रश्नः- ब्राह्मण जीवन का मुख्य कर्त्तव्य क्या है?

उत्तरः- बाप के याद में सदा स्मृति स्वरूप होकर रहना। जैसे मिश्री मिठास का रूप होती है वैसे ही याद स्वरूप ऐसे हो जाओ कि याद अलग ही न हो सके। अगर बाप की याद छोड़ी तो बाकी रहा ही क्या? जैसे शरीर से आत्मा निकल जाय तो उसे मुर्दा ही कहेगे? वैसे ही यदि ब्राह्मण जीवन से याद निकल जाय तो ब्राह्मण जीवन क्या हुआ? तो ऐसा याद-स्वरूप बनना है, तो ब्राह्मण जीवन का कर्त्तव्य है - याद-स्वरूप बनना।

(11.10.1975)

प्रश्नः- देहली, यमुना के किनारे पर है, यमुना किनारे का गायन क्यों?

उत्तरः- जैसे अब साकार रूप में जैसे यमुना किनारे निवास करते हो, वैसे बुद्धियोग द्वारा स्वयं को इस देह और देह की पुरानी दुनिया की स्मृति से किनारा किया हुआ अनुभव करो। संगमयुगी अर्थात् कलियुगी दुनिया से किनारा कर देना। किनारा अर्थात् न्यारा हो जाना। पुरानी दुनिया से न्यारे हो गये हो कि अब भी उसके प्यारे हो?

(11.10.1975)

प्रश्नः- दशहरे पर सभी रावण का दाह-संस्कार करते हैं, लेकिन अब आपको क्या करना है?

उत्तरः- आपके अपने में जो रावण-पन के संस्कार हैं, उन रावणपन के संस्कारों का संस्कार करो अर्थात् रावणपन के संस्कारों को सदा के लिए छुट्टी देकर लाभ उठाओ। हड्डियाँ व राख बाँध कर साथ नहीं ले जाना। राख अर्थात् संकल्प रूप में भी रावणपन के संस्कार नहीं ले जाना।

(11.10.1975)

प्रश्न:- बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों का प्रैक्टिकल जीवन में शक्तिपन की निशानी क्या दिखाई देगी?

उत्तर:- शक्तिपन की निशानी है - कहीं भी किसमें आसक्ति न हो। दूसरा, शक्ति-स्वरूप सदा सेवा में तत्पर रहेगा। सेवा में रहने वाले की कहीं भी आसक्ति नहीं होती। सेवा करने वाले त्याग और तपस्या-मूर्त्त होते हैं इसलिए उनकी कहीं भी आसक्ति नहीं होती - अर्थात् उनको बॉडी-कान्शस नहीं होता। तीसरे, उन्हें शक्तियाँ देने वाला बाप और उनके द्वारा मिली हुई शक्तियाँ ही याद रहती हैं। ऐसे शक्ति अवतार ही मायाजीत बनते हैं।

(20.10.1975)

प्रश्न:- किसी भी प्लैन को प्रैक्टिकल में लाने के लिये विशेष कौन-सी शक्ति की आवश्यकता है?

उत्तर:- परिवर्तन करने की शक्ति। जब तक परिवर्तन करने की शक्ति नहीं होगी, तब तक निर्णय को भी प्रैक्टिकल में नहीं ला सकते हैं। क्योंकि हर स्थान पर, हर स्थिति में, चाहे स्वयं के प्रति व सेवा के प्रति हो, परिवर्तन ज़रूर करना पड़ता है। जैसे सफ़लतामूर्त्त बनने के लिए संस्कार व स्वभाव परिवर्तन करना पड़ता है, वैसे ही सेवा में अपने विचारों को कहीं-न-कहीं परिवर्तन करना पड़ता है। परिवर्तन-शक्ति वाला कैसी भी परिस्थिति में सफ़ल हो जाता है क्योंकि वह बहुरूपी होता है। प्लैन को सेवा में लायेंगे और प्वाइन्ट्स को प्रैक्टिकल जीवन में लायेंगे - तो दोनों के लिये परिवर्तन करने की शक्ति चाहिये। नॉलेजफुल होने के नाते यह तो निर्णय कर लेते हैं कि 'ये होना चाहिये' लेकिन परिवर्तन नहीं होता है। इसका कारण है परिवर्तन-शक्ति की कमी। जिसमें परिवर्तन-शक्ति है, वे सर्व के स्नेही होंगे और सदा सफ़ल भी होंगे। संकल्प में दृढ़ता लाने से प्रत्यक्ष फल निकल आता है। परिवर्तन करके सफ़ल बनना ही है - यह है दृढ़ संकल्प। सफ़लता

सफ़लता-मूर्तों का आह्वान कर रही है कि सफ़लता-मूर्त्त आवें तो मैं उनके गले की माला बनूँ।

(02.02.1976)

प्रश्नः- सर्व प्वॉइन्ट्स का सार एक शब्द में सुनाओ?
उत्तर :- प्वाइन्ट्स का सार - प्वाइन्ट रूप अर्थात् बिन्दु रूप हो जाना।

(09.02.1976)

प्रश्नः- बिन्दु रूप स्थिति होने से कौन-सी डबल प्राप्ति होती है?
उत्तर :- बिन्दु रूप अर्थात् पॉवरफुल स्टेज, जिसमें व्यर्थ संकल्प नहीं चलते हैं और बिन्दु अर्थात् 'बीती सो बीती'। इससे कर्म भी श्रेष्ठ होते हैं और व्यर्थ संकल्प न होने के कारण पुरुषार्थ की गति भी तीव्र होगी। इसलिए बीती सो बीती को सोच-समझ कर करना है। व्यर्थ देखना, सुनना व बोलना सब बन्द। समर्थ आंखें खुली हों अर्थात् साक्षीपन की स्टेज पर रहो।

(09.02.1976)

प्रश्नः- कमल-पुष्प समान न्यारा बनने की युक्ति क्या है?
उत्तरः- कोई की भी कमी देखकर के उनके वातावरण के प्रभा-व में न आये, तो इसके लिए उस आत्मा के प्रति रहम की दृष्टि-वृत्ति हो और सामना करने की नहीं, अर्थात् यह आत्मा भूल के परवश है, इसका दोष नहीं है - इस संकल्प से उस वातावरण का व बात का प्रभाव आप आत्मा पर नहीं होगा। इसी को कहते हैं कमल-पुष्प समान न्यारा।

(09.02.1976)

प्रश्नः- सफ़लतामूर्त्त बनने के लिए क्या करना है?

उत्तरः- बदला नहीं लेना, बल्कि स्वयं को बदलना है। महावीर बनना है, मल्ल-युद्ध नहीं करना है। मल्ल-युद्ध करना माना अगर कोई ने कोई बात कही तो उसके प्रति संकल्प चलने लगें - यह क्या किया, यह क्यों कहा उसको कहा जाता है मन्सा से व वाचा से मल्ल-युद्ध करना। नमना अर्थात् झुकना। तो जब नमेंगे तब ही नमन योग्य होंगे। ऐसे नहीं समझो कि हम तो सदैव झुकते ही रहते हैं लेकिन हमारा कोई मान नहीं। जो झुकते नहीं व झूठ बोलते हैं उनका ही मान है - नहीं। यह अल्पकाल का है। लेकिन अब दूरन्देश बुद्धि रखो। यहाँ जितनों के आगे झुकेंगे अर्थात् नम्रता के गुण को धारण करेंगे तो सारा कल्प ही सर्व आत्मायें मेरे आगे नमन करेंगी। सतयुग त्रेता में राजा के रिगार्ड से काँध से नहीं लेकिन मन से झुकेंगे और द्वापर, कलियुग में काँध झुकायेंगे।

(09.02.1976)

प्रश्नः- छोटी सी ग़लती मुश्किल बना देती है। वह कौन सी ग़लती?

उत्तरः- सुनाया ना। मैं कैसे करूँ, मैं कर नहीं सकती, मैं चल नहीं सकती, किसने कहा आप चलो? बाप ने तो कहा नहीं कि अपने आप चलो। साथी का साथ पकड़ कर चलो। साथ छोड़ अपने ऊपर क्यों बोझ उठा कर चलते, जो कहना पड़े - मैं नहीं चल सकती, मैं नहीं कर सकती। ग़लती अपनी और फिर उल्हाने देंगे बाप को। अंगुली खुद छोड़ते, बोझ खुद उठाते, फिर कहते बोझ उठाया नहीं जाता। किसने कहा तुम उठाओ? आदत है ना बोझ उठाने की। जिसकी आदत होती है बोझ उठाने की, उनको बैठने का सहज काम करने कहो तो कर नहीं सकेगा। तो यह भी पिछली आदत के वश हो जाते हैं। यह भी नहीं कह सकते, मेरे पिछले संस्कार हैं। पिछले संस्कार हैं अर्थात् मरजीवा नहीं बने हैं। जब मरजीवा बन गए तो नया जन्म, नए संस्कार होने चाहिए। पिछले संस्कार पिछले जन्म के हैं। इस जन्म के नहीं। वह कुल ही दूसरा, यह कुल ही दूसरा। वह शुद्र कुल, यह

ब्राह्मण कुल। जब कुल बदलता है तो उसी कुल की मर्यादा को पालन करना है। जैसे लौकिक रीति में भी अगर कन्या का कुल शादी के बाद बदल जाता है तो उसी कुल की मर्यादा प्रमाण अपने को चलाना होता है। यह भी कुल बदल गया ना। तो यह सोचकर भी कमज़ोर न होना कि पिछली आदत है ना। इसलिए यह तो होगा ही। लेकिन अब के कुल की मर्यादा क्या है, उस मर्यादा के प्रमाण यह है ही नहीं।

(03.05.1977)

प्रश्नः- लास्ट का पुरुषार्थ वा लास्ट की सर्विस कौन सी है?
उत्तरः- आजकल जो पुरुषार्थ चाहिए वा सर्विस चाहिए, वह है वृत्ति से वायुमण्डल को पावरफुल बनाना। क्योंकि मैजारिटी अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ने में अस-मर्थ होते हैं। तो ऐसे असमर्थ व कमज़ोर आत्माओं को अपने वृत्ति द्वारा बल देना यह अति आवश्यक है। अभी यह सर्विस चाहिए। क्योंकि वाणी से बहुत सुनकर समझते, अभी हम सब फुल हो गए हैं, कोई नई बात नहीं लगेगी। वाणी से नहीं लेने चाहते। वृत्ति का डायरेक्ट कनेकशन वायुमण्डल से है। वायुमण्डल पावर फुल होने से सब सेफ हो जाएंगे। यही आजकल की विशेष सेवा है। वरदानी का अर्थ ही है - 'वृत्ति से सेवा करने वाले।' महादानी है वाणी से सेवा करने वाले। वरदानी की स्टेज की आजकल जरूरत है। वृत्ति से जो चाहो वह कर सकते हो।

(03.05.1977)

प्रश्नः- कमज़ोरियों को दूर करने का सहज साधन कौन सा है?
उत्तरः- जो कुछ संकल्प में आता है, वह बाप को अर्पण कर दो। जो भी आवे वह बाप को सामने रखते हुए ज़िम्मेवारी बाप को दो, तो स्वयं स्वतंत्र हो जाएंगे। सिर्फ एक दृढ़ संकल्प रखो कि 'मैं बाप का और बाप मेरा।' जब मेरा बाप है, तो मेरे के ऊपर अधिकार होता है न? अधिकारी स्वरूप में स्थित होंगे तो अधीनता

ऑटोमेटिकली निकल जाएगी। हर सेकेण्ड यह चैक करो कि अधिकारी स्टेज पर हूँ? विश्व के मालिक का मैं बालक हूँ, यह पक्का है? तो 'बालक सो मालिक।'

(05.05.1977)

प्रश्नः- सबसे सहज बात कौन सी है जिसको समझने से सदा के लिए सहज मार्ग अनुभव होगा?

उत्तरः- वह सहज बात है, सदा अपनी ज़िम्मेदारी बाप को दे दो। ज़िम्मेवारी देना सहज है ना। स्वयं को हल्का करो तो कभी भी मार्ग मुश्किल नहीं लगेगा। मुश्किल तब लगता है जब थकना होता या उलझते हैं। जब सब ज़िम्मेवारी बाप को दे दी तो फ़रिश्ते हो गये। फ़रिश्ते कब थकते हैं क्या? लेकिन यह सहज बात नहीं कर पाते तब मुश्किल हो जाता। ग़लती से छोटी-छोटी ज़िम्मेवारियों का बोझ अपने ऊपर ले लेते इसलिए मुश्किल हो जाता। भक्ति में कहते थे - 'सब कर दो राम हवाले' - अब जब करने का समय आया तब अपने हवाले क्यों करते? मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार - यह मेरा कहां से आया? अगर मेरा खत्म, तो नष्टो मोहा हो गये। जब मोह नष्ट हो गया तो सदा स्मृति स्वरूप हो जायेंगे। सब कुछ बाप के हवाले करने से सदा खुश और हल्के रहेंगे। देने में फिराकदिल बनो, अगर पुरानी कीचड़पट्टी रख लेंगे तो बीमारी हो जाएगी। 'निश्चय बुद्धि की निशानी है सदा निश्चिन्त।' जो निश्चिन्त होगा वही एक रस रहेगा, डगमग नहीं होगा। अचल रहेगा। कुछ भी हुआ, सोचो नहीं। क्यों, क्या में कभी नहीं जाओ, त्रिकालदर्शी बन निश्चिन्त रहो। हर कदम में कल्याण है। जिस बात में अकल्याण भी दिखाई देता उसमें भी कल्याण समाया हुआ है, सिर्फ अन्तर्मुखी हो देखो। ब्राह्मणों का कभी भी अकल्याण हो नहीं सकता। क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ पकड़ा है ना! अकल्याण को भी वह कल्याण में परिवर्तन कर देगा। इसलिए 'सदा निश्चिन्त रहो।'

(05.05.1977)

प्रश्नः- अति इन्द्रिय सुख में रहने वालों की निशानी क्या होगी?

उत्तरः- अति इन्द्रिय सुख में रहने वाला कभी अल्पकाल के इन्द्रिय के सुख की तरफ़ आकर्षित नहीं होगा। जैसे कोई साहूकार रास्ते चलते हुए कोई चीज़ पर आकर्षित नहीं होगा - क्योंकि वह सम्पन्न है, भरपूर है। इसी रीति से अति इन्द्रिय सुख में रहने वाला इन्द्रियों के सुख को ऐसे मानेगा जैसे ज़हर के समान है। तो ज़हर की तरफ़ आकर्षित होते हैं क्या? ऐसे इन्द्रियो के सुख से सदा परे रहेंगे। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी, लेकिन नालेजफुल होने के कारण उसके सामने वह तुच्छ दिखाई देगा। अगर चलते-चलते इन्द्रियों के सुख के तरफ़ आकर्षित होते, इससे सिद्ध है कि अति इन्द्रिय सुख की अनुभूति में कोई कमी है। इच्छा है लेकिन प्राप्ति नहीं। जिज्ञासु है, बच्चा नहीं। बच्चा अर्थात् अधिकारी, जिज्ञासु अर्थात् इच्छा रखने वाले। प्राप्त हो - यह इच्छा नहीं, लेकिन प्राप्त है - इस अधिकार की खुशी में रहने वाले। सदा इस अति इन्द्रिय सुख में रहो। इन्द्रियों के सुख का अनुभव कितने जन्म से कर रहे हो? उससे प्राप्ति का भी ज्ञान है ना? क्या प्राप्त हुआ? कमाया और गंवाया। जब गंवाना ही है तो फिर अभी भी उस तरफ़ आकर्षित क्यों होते? अति इन्द्रिय सुख की प्राप्ति का समय अभी भी थोड़ा है। यह अभी नहीं तो कभी नहीं मिलेगा। इसका सौदा अभी नहीं किया तो कभी नहीं कर सकेंगे। फिर भी सोचते रहते - छोड़े, नहीं छोड़े? बाप कहते हैं तो छोड़ो तो छूटे। कहते हैं छूटता नहीं है। पकड़ा खुद है और कहते हैं छूटता नहीं है। रचता तो आप हो ना। बार-बार ठोकर मत खाओ।

(14.05.1977)

प्रश्नः- सदा अचल, अड़ोल रहने के लिए विशेष किस गुण को धारण करना है?

उत्तरः- सदा गुण ग्राहक बनो। अब हर बात में गुणग्राही होंगे तो हलचल में नहीं आयेंगे। गुणग्राही अर्थात् कल्याणकारी भावना। अवगुण देखने से अकल्याण की भावना और हलचल में रहेंगे। अवगुण में गुण देखना, इसको कहते हैं- 'गुणग्राही'।

अवगुण देखते भी अपने को गुण उठाना चाहिए। अवगुण वाले से गुण उठाओ कि जैसे यह अवगुण में दृढ़ है वैसे हम गुण में दृढ़ रहें। गुण का ग्राहक बनो अवगुण का नहीं।

(14.05.1977)

प्रश्न:- कौन सा भोजन आत्मा को सदा शक्तिशाली बना देगा?

उत्तर:- खुशी का। कहते हैं ना खुशी जैसी खुराक नहीं। खुशी में रहने वाला शक्तिशाली होगा। ड्रामा की ढ़ाल को अच्छी तरह से कार्य में लाने से सदा खुश रहेंगे, मुरझायेंगे नहीं। अगर सदा ड्रामा ही स्मृति रहे तो कभी भी मुरझा नहीं सकते। सदा खुशी बुद्धि तक, नालेज के रूप में नहीं। कोई भी दृश्य हो अपना कल्याण निकाल लेना चाहिए। तो सदा खुश रहेंगे।

(14.05.1977)

प्रश्न:- ट्रस्टी का विशेष लक्षण क्या दिखाई देगा?

उत्तर:- जो ट्रस्टी होगा उसका विशेष लक्षण, सदैव स्वयं को हर बात में हल्का अनुभव करेगा। डबल लाइट अनुभव करेगा। शरीर के भान का भी बोझ न हो - इसको कहा जाता है - 'ट्रस्टी'। अगर देह के भान का बोझ है तो एक बोझ के साथ अनेक प्रकार के बोझ से परे रहने का यह साधन है। तो चैक करो बॉडी कान्सेस (देहभान) में कितना समय रहते? जब बाप के बने, तो तन-मन-धन सहित बाप के बने ना? सब बाप को दिया ना? जब दे दिया तो अपना कहाँ से रहा? जब अपना नहीं तो मान किस चीज़ का? अगर मान आता, तो सिद्ध है, देकर के फिर लेते हो। अभी-अभी दिया, अभी-अभी लिया, यह खेल करते हो। 'ट्रस्टी अर्थात् मेरापन नहीं।' जब मेरापन समाप्त हो जाता, तो लगाव भी समाप्त हो गया। ट्रस्टी बन्धन वाला नहीं होता, स्वतंत्र आत्मा होता, किसी भी आकर्षण में परतंत्र होना भी

ट्रस्टीपन नहीं। 'ट्रस्टी माना ही स्वतंत्र।'

(05.06.1977)

प्रश्नः- नष्टोमोहा बनने की सहज युक्ति कौनसी है?

उत्तरः- सदैव अपने घर की स्मृति में रहो। आत्मा के नाते, आपका घर 'परमधाम' है और ब्राह्मण जीवन के नाते, साकार सृष्टि वृक्ष में यह 'मधुबन' आपका घर है, क्योंकि ब्रह्मा बाप का घर मधुबन है। यह दोनों ही घर स्मृति में रहे, तो नष्टोमोहा हो जायेंगे। क्योंकि जब अपना परिवार, अपना घर कोई बना लेते तो उसमें मोह जाता, अगर उसको दफ्तर समझो तो मोह नहीं जाएगा। सदैव बुद्धि में रहे, सेवा स्थान पर सेवा के निमित्त रूप आत्माएं हैं - न कि मेरा कोई लौकिक परिवार है। सब अलौकिक सेवाधारी हैं; कोई सेवा करने के निमित्त हैं, कोई की सेवा करनी है। लौकिक सम्बन्ध भी सेवा के अर्थ मिला है - 'यह मेरा लड़का या लड़की है' नहीं। सेवा के निमित्त यह सम्बन्ध मिला है। मैं पति हूँ, पिता हूँ, चाचा हूँ - यह सम्बन्ध समाप्त हो जाए, तो ट्रस्टी हो जायेंगे। स्मृति विस्मृति का रूप तब लेती जब मेरापन है। अगर मेरापन खत्म हो जाए, तो नष्टोमोहा हो जाएंगे। 'नष्टोमोहा अर्थात् स्मृति स्वरूप।'

(05.06.1977)

प्रश्नः- ट्रस्टी की विशेषता क्या होती है?

उत्तरः- एक शब्द में कहें - ट्रस्टी अर्थात् नष्टोमोहा। ट्रस्टी का किसी में मोह नहीं होता; क्यों? क्योंकि मेरापन नहीं है। मेरे में मोह जाता है। जो भी प्रवृत्ति के अर्थ साधन मिले हुए हैं वा सेवा के अर्थ सम्बन्ध होता है, उसमें मेरापन नहीं लेकिन बाप-दादा का दिया हुआ अमानत समझकर सेवा करेंगे वा साधनों को कार्य में लगा-एंगे तो सहज ही ट्रस्टी बन जाएंगे। ट्रस्टी अर्थात् मैं-पन समाप्त और बाबा-बाबा ही मुख से निकले ऐसी स्थिति है? या जिन साधनों को कार्य में लगाते हो

उसमें मेरापन का भान है? मेरापन है तो देहभान आता है। अगर तन के भी ट्रस्टी है तो देह का भान हो नहीं सकता। जब से जन्म हुआ तो पहला वायदा क्या किया? जो मेरा सो बाप का। मरजीवा हो गए ना? फिर मेरापन कहां से आया? दी हुई चीज़ कभी वापिस नहीं ली जाती। तो सदा देही अभिमानी बनने का अर्थात् नष्टोमोहा बनने का सहज साधन क्या हुआ? ट्रस्टी हूँ, मैं ट्रस्टी हूँ। कल्प पहले के यादगार में भी अर्जुन का जो यादगार दिखाया है - उसमें अर्जुन को मुश्किल कब लगा? जब मेरापन आया। मेरा खत्म तो नष्टोमोहा। अर्थात् स्मृति स्वरूप हो गए। मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी दुकान, मेरा दफ्तर - यह मेरा-मेरी सहज को मुश्किल कर देता है। सहज मार्ग का साधन है - 'नष्टो मोहा अर्थात् ट्रस्टी।' इस स्मृति से स्वयं और सर्व को सहज योगी बनाओ। समझा?

(22.06.1977)

प्रश्नः- वृत्ति चंचल होने का कारण तथा अचल बनने की सहज युक्ति कौन-सी?
उत्तरः- वृत्ति चंचल होने का कारण क्यों और क्या - यही दो शब्द हलचल में लाते हैं और एक शब्द नथिंग-न्यू अचल बना देता है। और होना ही है और हुआ ही पड़ा है। इसके सिवाए और कोई बात नहीं तो चंचल होंगें? नथिंग-न्यू तो क्यों और क्या समाप्त हो जाता है। कैसी भी बात आजाए, चाहे मन्सा की, चाहे वाणी की, चाहे सम्पर्क सम्बन्ध की, लेकिन नथिंग-न्यू। क्या और क्यों का क्वेश्चन नई चीज़ में लगता है। नथिंग न्यू में न क्वेश्चन और न आश्चर्य। तो इसी पाठ को रिवाईज़ करके पक्का करो।

(07.01.1978)

प्रश्नः- माया की चाल से बचकर सदा विजयी बनने की विधि क्या है?
उत्तरः- मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर स्थित रहो। मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् विजयी रत्न। माया अन्दर से बिल्कुल ही शक्तिहीन है, उसका बाहर का

रूप देख घबराओ नहीं, उसको ज़िन्दा समझ मूर्छित न हो जाओ, माया मूर्च्छित हुई पड़ी है। लेकिन कभी-कभी मूर्च्छित को देखकर भी मूर्च्छित हो जाते हैं। अब उसे खुशी-खुशी विदाई दो। नालेजफुल की स्टेज पर रहो तो कभी धोखा नहीं खा सकते।

(07.01.1978)

प्रश्न:- दुनिया के वायब्रेशन से अथवा माया से सेफ़ रहने का साधन क्या है?
उत्तर:-सदा एक बाप दूसरा न कोई जो इसी लगन में मगन रहते वह माया के हर प्रकार के वार से बचे रहते हैं। जैसे जब लड़ाई के समय बाम्ब्स गिराते हैं तो अण्डरग्राउण्ड हो जाते, उसका असर उन्हें नहीं होता तो ऐसे ही जब एक लगन में मगन रहते तो दुनिया के वायब्रेशन से, माया से बचे रहेंगे, सदा सेफ़ रहेंगे। माया की हिम्मत नहीं जो वार करे। लगन में मगन रहो। यही है सेफ़्टी का साधन।

(13.01.1978)

प्रश्न:- बाप के समीप रतनों की निशानी कौन-सी है?
उत्तर:- बाप के समीप रहने वालों के ऊपर बाप के सत के संग का रंग चढ़ा हुआ होगा। सत के संग का रंग है रूहानियत। तो समीप रतन सदा रूहानी स्थिति में स्थित होंगे। शरीर में रहते हुए न्यारे, रूहानियत में स्थित रहेंगे। शरीर को देखते हुए भी न देखें और आत्मा जो न दिखाई देने वाली चीज़ है। वह प्रत्यक्ष दिखाई दे यही कमाल है। रूहानी मस्ती में रहने वाले ही बाप को साथी बना सकते , क्योंकि बाप रूह है।

(13.01.1978)

प्रश्न:- पुरानी दुनिया के सर्व आकर्षणों से परे होने की सहज युक्ति क्या है?
उत्तर:- सदैव नशे में रहो कि हम अविनाशी ख़ज़ाने के मालिक हैं। जो बाप का

ख़ज़ाना ज्ञान, सुख शान्ति, आनन्द है... वह सर्व गुण हमारे हैं। बच्चा बाप की प्रोपर्टी का स्वत: ही मालिक होता है। अधिकारी आत्मा को अपने अधिकार का नशा रहता है, नशे में सब भूल जाता है ना। कोई स्मृति नहीं होती, एक ही स्मृति रहे बाप और मैं - इसी स्मृति से पुरानी दुनिया के आकर्षण से ऑटोमेटिकली परे हो जायेंगे। नशे में रहने वाले के सामने सदा निशाना भी स्पष्ट होगा। निशाना है फ़रिश्तेपन का और देवतापन का।

(13.01.1978)

प्रश्न:- एक सेकेण्ड का वन्डरफुल खेल कौन-सा है जिससे पास विद् ऑनर बन जायें ?

उत्तर:- एक सेकेण्ड का खेल है अभी-अभी शरीर में आना और अभी-अभी शरीर से अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाना। इस सेकेण्ड के खेल का अभ्यास है, जब चाहो जैसे चाहो उसी स्थिति में स्थित रह सको। अन्तिम पेपर सेकेण्ड का ही होगा जो इस सेकेण्ड के पेपर में पास हुआ वही पास विद् ऑनर होगा। अगर एक सेकेण्ड की हलचल में आया तो फेल, अचल रहा तो पास। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर है। अभी ऐसा अभ्यास तीव्र रूप का होना चाहए। जितना हंगामा हो उतना स्वयं की स्थिति अति शान्त। जैसे सागर बाहर आवाज़ सम्पन्न होता अन्दर बिल्कुल शान्त, ऐसा अभ्यास चाहिए। कन्ट्रोलिंग पावर वाले ही विश्व को कन्ट्रोल कर सकते हैं। जो स्वयं को नहीं कर सकते वह विश्व का राज्य कैसे करेंगे। समेटने की शक्ति चाहिए। एक सेकेण्ड में विस्तार से सार में चले जायें। और एक सेकेण्ड में सार से विस्तार में आ जायें यही है वन्डरफुल खेल।

(13.01.1978)

प्रश्न:- माया को एक शब्द से मूर्च्छित करो - वह कौन-सा शब्द?

उत्तर:- 'बाबा' जहाँ बाबा है वहाँ माया नहीं। अगर दिल से, सम्बन्ध से, स्नेह से

बाबा कहा और माया भागी। जैसे कितना भी बड़ा डाकू हो लेकिन जब पकड़ा जाता है तो बड़ा डाकू भी बकरी बन जाता। तो बाबा शब्द निकलना और डाकू का पकड़ा जाना। माया जो सेकेण्ड के पहले शेर के रूप वाली होती वह सेकेण्ड बाद बकरी बन जाती। तो इस साधन को सदा साथ रखो। बाबा भूला माना सब कुछ भूला। साधन सहज है सिर्फ बार-बार यूज़ करने का तरीका आना चाहिए। सेकेण्ड में परिवर्तन हो इसको कहा जाता है यूज़ करने का तरीका आता है। सदा यह याद रखो मेरा बाबा, जब मेरा बाबा आ गया तो माया भाग गई।

(13.01.1978)

प्रश्नः- सहजयोगी की स्टेज स्वत: बनी रहे उसकी विधि क्या है?

उत्तरः- अमृतवेले के महत्व को जानो। अमृतवेला है दिन का आदि। जो अमृतवेले अर्थात् सारे दिन के आदि के समय पावरफुल स्टेज बनायेंगे तो सारा दिन मदद मिलेगी। सारे दिन की जीवन महान बन जायेगी। क्योंकि जब अमृतवेले विशेष बाप से शक्ति भर ली तो शक्ति स्वरूप हो चलने से मुश्किल नहीं होगा, चाहे जैसा कार्य आवे मुश्किल का अनुभव नहीं, लेकिन प्राप्त शक्ति के आधार से सहज हो जायेगा। इससे सहज योगी की स्टेज स्वत: बनी रहेगी। अमृतवेले को मिस करना अर्थात् संगम की विशेष प्राप्ति को खत्म करना। जो भी ईश्वरीय मर्यादायें हैं उन मर्यादाओं पूर्वक जीवन बिताने से विश्व के आगे एग्जाम्पल बन जायें। विश्व आपके जीवन को देखते अपनी जीवन बनायेगी, तो मर्यादा की लकीर के अन्दर रहो तो माया आ नहीं सकती। कुछ भी हो लेकिन स्वयं का उमंग-उत्साह हर सेकेण्ड नया होना चाहिए। स्वयं के उमंग-उत्साह का आधार स्वयं है, उसमें कोई दूसरा रोक नहीं सकता, उसमें सदा चढ़ती कला होनी चाहिए। रुकना काम है कमज़ोरों का।

(13.01.1978)

प्रश्नः- स्वयं के पुरुषार्थ में और सेवा में सदा वृद्धि होती रहे उसका सहज साधन कौन सा है?

उत्तरः- वृद्धि का सहज साधन है अमृतवेले से लेकर विधिपूर्वक चलना तो जीवन वृद्धि को पायेगा। कोई भी कार्य सफल तब होता जब विधि से करते। ब्राह्मण अर्थात् विधिपूर्वक जीवन। अगर किसी भी बात में स्वयं के पुरुषार्थ व सेवा में वृद्धि नहीं होती तो ज़रूर कोई विधि की कमी है। चैक करो कि अमृतवेले से लेकर रात तक मन्सा-वाचा-कर्मणा व सम्पर्क विधिपूर्वक रहा अर्थात् वृद्धि हुई? अगर नहीं तो कारण को सोचकर निवारण करो। फिर दिलशिकस्त नहीं होंगे। अगर विधिपूर्वक जीवन होगी तो वृद्धि अवश्य होगी।

(18.01.1978)

प्रश्नः- किस धारणा के आधार से सदा सुख के सागर में समाये रहेंगे?

उत्तरः- अन्तर्मुखी बनो - अन्तर्मुखी सदा सुखी। इन्दौर निवासी अर्थात् अन्तर्मुखी सदा सुखी। बाप सुख का सागर है तो बच्चे भी सुख के सागर में लवलीन रहते होंगे। सुखदाता के बच्चे स्वयं भी सुख दाता। सर्व आत्माओं को सुख का खज़ाना बाँटने वाले। जो भी आवे जिस भावना से आये वह भावना आपसे सम्पन्न करके जाए - सर्व सम्पन्न मूर्तियाँ बनो। जैसे बाप के खज़ाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं, वैसे बच्चे भी बाप समान तृप्त आत्मा होंगे।

(19.12.1978)

प्रश्नः- स्थाई नशे में कौन रह सकते हैं? स्थाई नशे में रहने वालों की निशानी क्या होगी?

उत्तरः- स्थाई नशे में वही रह सकते जो बाप-दादा के दिल तख्तनशीन हैं। संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माओं का स्थान ही है बाप का दिलतख्त। ऐसा तख्त सारे कल्प में नहीं मिल सकता, विश्व के राज्य का वा स्टेट के राज्य का तख्त तो

मिलता रहेगा लेकिन ऐसा तख्त फिर नहीं मिलेगा - यह इतना विशाल तख्त है जो चलो फिरो, खाओ-सोयो लेकिन सदा तख्तनशीन। जो ऐसे तख्तनशीन बच्चे हैं वह पुरानी देह वा देह की दुनिया से विस्मृत रहते हैं, देखते हुए भी नहीं देखते।

(19.12.1978)

प्रश्नः- सदा सम्पन्न आत्माओं की निशानियाँ कौन-सी है?

उत्तरः- जो सदा सर्व खजानों से सम्पन्न होगा वह सदा सन्तुष्ट होगा। असन्तुष्टता का कारण है अप्राप्ती। जो भरपूर आत्मायें हैं वह अन्य आत्माओं को भी दे सकेंगी। अगर स्वयं में कमी होगी तो औरों को भी दे नहीं सकते। सन्तुष्टता अर्थात् सम्पन्नता। जैसे बाप सम्पन्न है इसलिए बाप की महिमा में सागर शब्द कहते हैं, यह सम्पन्नता को सिद्ध करता है। तो बाप समान मास्टर सागर बनो। नदी तो फिर भी सूख जाती है। सम्पन्न आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी। खुशी के सिवाए और कुछ अन्दर आ नहीं सकता। सन्तुष्ट आत्मायें सम्पन्न होने के कारण किसी से भी तंग नहीं होगी। सम्बन्ध में भी कोई खिटखिट नहीं होगी। अगर होगी भी तो उसका असर नहीं आयेगा। किसी भी प्रकार की उलझन या विघ्न एक खेल अनुभव होगा। समस्या भी मनोरंजन का साधन बन जायेगी क्योंकि नालेजफुल होकर देखेंगे। वह सदा निश्चयबुद्धि होने के कारण निश्चय के आधार पर विजयी होंगे। सदा हर्षित होंगे।

(06.01.1979)

प्रश्नः- आप ब्राह्मण आत्मायें विशेष आत्माओं की लिस्ट में हो? इस लिस्ट में कौन आते हैं?

उत्तरः- विशेष आत्माओं की लिस्ट में वही आते जिनमें कोई-न-कोई विशेषता है। कोई भी ब्राह्मण बच्चा ऐसा नहीं जिसमें कोई विशेषता न हो सबसे पहली विशेषता तो यही है जो बाप को जान लिया, बाप को पा लिया। कोटो में कोई और

कोई में भी कोई ने जाना। तो बाप भी उसी नज़र से देखते हैं कि यह विशेष आत्मायें हैं। विशेष आत्माओं को सदा खुशी के झूले में झूलना चाहिए। लाडले बच्चे कभी भी मिट्टी में पाँव नहीं रखते, आप लाडले बच्चे सदा बाप की याद के गोदी में रहो। सब-कुछ करते भी बाप की गोद में रहो, नीचे न आओ।

(12.11.1979)

प्रश्नः- इस संगमयुग को वरदान है - कौन सा?

उत्तरः- स्वयं वरदाता ही आपका है। जब वरदाता ही आपका है, तो बाकी क्या रहा? बीज आपके हाथ में हैं, जिस बीज द्वारा सेकेण्ड में जो चाहो वह ले सकते हो। सिर्फ संकल्प करने की बात है। शक्ति चाहिए, सुख चाहिए, आनन्द चाहिए, सब आपके लिए जी हजूर हैं क्योंकि हजूर ही आपका है। जैसे स्थूल सेवाधारी बुलाने से हाज़िर हो जाते हैं वैसे यह सर्व प्राप्तियाँ संकल्प से हाज़िर हो जावेंगी। लेकिन हज़ूर आपका है तो यह सब हाज़िर हैं। बीज आपका है तो यह सब फल आपके हैं।

(14.11.1979)

प्रश्नः- खुशी गुम होने का कारण क्या है?

उत्तरः- चलते-चलते करते क्या हो! दो लड्डू हाथ में उठाने की कोशीश करते हो। लेने के लिए तो तैयार हो जाते हो लेकिन छोड़ने वाली चीज़ भी फिर ले लेते हो। इसलिए विस्तार में जाने से सार को छोड़ देते हो। बीच मे से खिसक जाता है, यह मालूम नहीं पड़ता इसलिए फिर खाली हो जाते हो और मेहनत करते हो अपने को भरपूर करने की, लेकिन बीज छूट जाने के कारण प्रत्यक्षफल की प्राप्ति हो नहीं पाती है इसलिए थक जाते हो। भविष्य के दिलासे से अपने को चलाते रहते हो। प्रत्यक्षफल की बजाय भविष्य फल के उम्मीदवार बनकर चलते हो, इसलिए खुशी की झलक सदा नज़र नहीं आती। मेहनत की रेखायें ज्यादा नज़र आती हैं, प्राप्ति

की रेखायें कम नज़र आती हैं। त्याग की महसूसता ज्यादा होती है भाग्य की महसूसता कम होती है।

(14.11.1979)

प्रश्नः- सम्पर्क और सेवा दोनों में सफल बनने के लिए मुख्य कौन सी धारणा चाहिए?

उत्तरः- सफलता तभी मिलेगी जबकि सदैव स्वयं को मोल्ड करने की क्वालिफिकेशन होगी। अगर स्वयं को मोल्ड नहीं कर सकते तो गोल्डन एज की स्टेज तक पहुँच न सकेंगे। जैसा समय जैसे सरकमसटेन्सिज हों उसी प्रमाण अपनी धार-णाओं को प्रत्यक्ष करने के लिए मोल्ड होना पड़े। मोल्ड होने वाले ही रीयल गोल्ड हैं। अगर मोल्ड नहीं होते तो रीयल गोल्ड नहीं हैं। जैसे साकार बाप की विशेषता देखी - जैसा समय, जैसा व्यक्ति, वैसा रूप। तो सदा सफलतामूर्त के लिए विशेष यह क्वालिफिकेशन चाहिए।

(19.11.1979)

प्रश्नः- एक धर्म एक राज्य और एक भाषा, ऐसी दुनिया कब स्थापन होगी?

उत्तरः- जब सब ब्राह्मणों की स्थिति एकरस हो जायेगी। एकरस स्थिति अर्थात हम सब एक हैं। एक बाप के बच्चे हैं। सर्वश्रेष्ठ आत्मायें। भले स्थूल देश भिन्न-भिन्न हैं, यह शरीर के देश हैं लेकिन आत्माओं का देश एक ही है। हरेक की एकरस स्थिति बन जाए तो बहुत जल्दी एक राज्य, एक भाषा, ऐसी दुनिया स्थापन हो जाएगी। जब से ब्राह्मण बने तो यही एक संकल्प धारण किया है कि ऐसा राज्य स्थापन करके ही छोड़ेंगे। ऐसा जहाँ सब एक ही एक होगा, स्थापन करने के लिए स्थिति भी एकरस चाहिए।

(19.11.1979)

प्रश्न:- निरन्तर योगी बनने का सहज साधन क्या है?

उत्तर:- सदा दिलतख्तनशीन बनने से स्वत: ही निरन्तर योगी बन जायेंगे। वर्तमान समय बाप द्वारा जो ताज और तख्त मिला है उसको सदा कायम रखो। अभी का ताज व तख्त अनेक जन्मों के लिए ताज व तख्त प्राप्त कराता है। विश्व-कल्याण की जिम्मेवारी का कार्य भूलना अर्थात् ताज को उतारना। ताज उतरता तो नहीं है ना! तख्त है - बाप का दिलतख्त। जो सदा बाप के दिलतख्तनशीन हैं वह निरन्तर स्वत: योगी रहते हैं, मेहनत की कोई बात है ही नहीं। क्योंकि एक तो सम्बन्ध बड़ा समीप है तो मेहनत काहे का। दूसरे प्राप्ति अखुट है, जहाँ प्राप्ति होती हैं वहाँ स्वत: याद होती है। ऐसे स्वत: और सहज योगी हो कि मेहनत करनी पड़ती है।

(19.11.1979)

प्रश्न:- सदा सेफटी का साधन है क्या है?

उत्तर:- ड्रामानुसार कलियुगी दुनिया का दु:ख और अशान्ति का नज़ारा देख बेहद के वैरागी बनते जायेंगे। कुछ भी होता है, अपनी सदा चढ़ती कला हो। दुनिया के लिए हाहाकार है और आपके लिए जय-जयकार है। आप जानते हो यह दुनिया हाहाकार होने वाली है। हाहाकार होना अर्थात् जाना। किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं। हमारे लिए तैयारी हो रही है। साक्षी होकर सब प्रकार का खेल देखो। कोई रोता है, चिल्लाता है, साक्षी होकर देखने से मज़ा आता है। 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन भी नहीं उठता। यह होना ही है। ऐसे अटल हो ना? 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन तो नहीं उठता। अनेक बार यह सब हलचल देखी है और अब भी देख रहे हो। क्या भी हो दुनिया में, लेकिन याद की भट्टी में रहने वाले सदा सेफ रहते हैं।

(07.12.1979)

प्रश्नः- एक रस स्थिति बनाने का सहज साधन क्या है?

उत्तरः- एक बाप द्वारा सर्व रस अर्थात् सर्व प्राप्ति का अनुभव करने वाले, इसको कहा जाता है - एक रस स्थिति में रहने वाले - ऐसे रहते हो? दूसरा कोई भी दिखाई न दे। है कुछ जो दिखाई दे? सिवाए बाप के और कोई देखने की वस्तु है, जो देखो? बाप के सिवाए कोई सुनाने वाला है जिससे सुनो? बहुतों को देख भी लिया, सुन भी लिया और उसका परिणाम भी देख लिया। अभी एक की याद में एकरस। बहुतों को छोड़ एक की याद, एक को देखो, एक से सुनो, एक से बेठो ....अनेकों से निभाना मुश्किल होता है, एक से सहज होता है। अनेक जन्म अनेकों से निभाया। बाप से अलग, टीचर से अलग, गुरू से अलग...अब सहज तरीका बाप ने बताया कि एक से निभाओ। जहाँ देखो वहाँ एक ही देखो, इसी को ही भावना के कारण भक्ति में सर्वव्यापी कह दिया है। वह कह देते तू ही तू...आप सदा बाप के साथ का अनुभव करते हो। जहाँ जाओ वहाँ बाप ही बाप अनुभव हो।

(02.01.1980)

प्रश्नः- पाप कर्मों से छुटकारा पाने का साधन क्या है?

उत्तरः- सभी अपने को लाइट हाउस और माइट हाउस समझते हो? जहाँ लाइट होती है वहाँ कोई भी पाप का कर्म नहीं होता है। तो सदा लाइट हाउस रहने से माया कोई पाप कर्म नहीं करा सकती। सदा पुण्य आत्मा बन जायेंगे। ऐसे अपने को पुण्य आत्मा समझते हो? पुण्य आत्मा संकल्प में भी कोई पाप कर्म नहीं कर सकती। और पाप वहाँ होता है जहाँ बाप की याद नहीं होती। बाप है तो पाप नहीं, पाप है तो बाप नहीं। तो सदा कौन रहता है? पाप खत्म हो गया ना? जब पुण्य आत्मा के बच्चे हो तो पाप खत्म। तो आज से **'मैं पुण्य आत्मा हूँ पाप मेरे सामने आ नहीं सकता'** यह दृढ़ संकल्प करो। जो समझते हैं आज से पाप को स्वप्न में भी, संकल्प में भी नहीं आने देंगे वह हाथ उठाओ। दृढ़ संकल्प की तीली से 21 जन्मों के लिए पाप कर्म खत्म। बाप-दादा भी ऐसे हिम्मत रखने वाले बच्चों को मुबारक

देते हैं। यह भी कितना भाग्य है जो स्वयं बाप बच्चों को मुबारक देते हैं। इसी स्मृति में सदा खुश रहो और सबको खुश बनाओ।

(07.03.1981)

प्रश्नः- बाप सदा बच्चों को आहवान करते हैं, बाप को भी सभी बच्चे बहुत प्रिय हैं - क्यों?

उत्तरः- बच्चे न हों तो बाप का नाम भी बाला न हो। बाप को बच्चे सदा प्रिय हैं क्योंकि बाप हर बच्चे की विशेषता को देखते हैं। बाप बच्चों के तीनों कालों को जानते हैं। भक्ति में भी कितना धक्का खाया यह भी जानते हैं और अब भी अपने-अपने यथाशक्ति कितना पुरुषार्थ कर आगे बढ़ रहे हैं यह भी जानते हैं और भविष्य में क्या बनने वाले हैं यह भी बाप के आगे स्पष्ट है, तो तीनों कालों को देख बाप को हर बच्चा अति प्रिय लगता है।

(11.03.1981)

प्रश्नः- सबसे बड़े ते बड़ी सेवा कौन-सी है जो तुम रूहानी सेवाधारियों को जरूर करनी है?

उत्तरः- किसी के दुःख लेकर सुख देना यह है सबसे बड़ी सेवा। तुम सुख के सागर बाप के बच्चे हो, तो जो भी मिले उनका दुःख लेते जाना और सुख देते जाना। किसका दुःख लेकर सुख देना यही सबसे बड़े ते बड़ा पुण्य का काम है। ऐसे पुण्य करते-करते पुण्यात्मा बन जायेंगे।

(13.03.1981)

प्रश्नः- बापदादा हर स्थान की रिजल्ट किस आधार पर देखते हैं?

उत्तरः- उस स्थान का वायुमण्डल वा परिस्थिति कैसी है, उसी आधार पर बापदादा रिजल्ट देखते हैं। अगर सख्त धरनी से कलराठी जमीन से दो फूल भी

निकल आये तो वह 100 से भी ज्यादा है। बाबा दो को नहीं देखते लेकिन दो भी 100 के बराबर देखते हैं। कितना भी छोटा सेन्टर हो, छोटा नहीं समझना। कहाँ क्वालिटी है तो कहाँ क्वान्टिटी है। जहाँ भी बच्चों का जाना होता है वहाँ सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है।

(17.03.1981)

प्रश्नः- किस डबल स्वरूप से सेवा करो तो वृद्धि होती रहेगी?

उत्तरः- रूप और बसन्त दोनों स्वरूप से सेवा करो, दृष्टि से भी सेवा और मुख से भी सेवा। एक ही समय दोनों रूप की सेवा डबल रिजल्ट निकलेगी।

(17.03.1981)

प्रश्नः- कौन सा वेट (वजन) कम करो तो आत्मा शक्तिशाली बन जायेगी?

उत्तरः- आत्मा पर वेस्ट का ही वेट है। वेस्ट संकल्प, वेस्ट वाणी, वेस्ट कर्म इससे ही आत्मा भारी हो जाती है। अभी इस वेट को खत्म करो। इस वेट को समाप्त करने के लिए सदा सेवा में बिजी रहो। मनन शक्ति को बढ़ाओ। मनन शक्ति से आत्मा शक्तिशाली बन जायेगी। जैसे भोजन हजम करने से खून बनता है, फिर वही शक्ति का काम करता, ऐसे मनन करने से आत्मा की शक्ति बढ़ती है।

(18.03.1981)

प्रश्नः- कौन-सा मंत्र भक्ति में बहुत ही प्रसिद्ध है, जिसकी स्मृति में रहो तो खुशी के झूले में झूलते रहेंगे?

उत्तरः- भक्ति में ठहम सो, सो हमठ का मंत्र बहुत प्रसिद्ध है, अभी आप बच्चे हम सो का राज़ प्रैक्टिकल में अनुभव कर रहे हो। यह मंत्र हमारे लिए है, हम ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। हम ही सो देवता थे, सो देवता हम ब्राह्मण बने हैं। यह अभी पता चला। अब देवताओं के चित्र देखकर बुद्धि में आता यह हमारे ही चित्र हैं। यही

वन्डर हैं। इसी स्मृति में रहो तो खुशी के झूले में झूलते रहेंगे।

(18.03.1981)

प्रश्नः- जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सहज साधन कौन सा है?

उत्तरः- श्रेष्ठ जीवन तब बनती जब अपने को ट्रस्टी समझकर चलते। ट्रस्टी अर्थात् न्यारा और प्यारा। तो सभी को बाप ने ट्रस्टी बना दिया। ट्रस्टी हो ना? ट्रस्टी होकर रहने से गृहस्थी पन स्वत: निकल जाता है। गृहस्थीपन ही श्रेष्ठ जीवन से नीचे ले आता। ट्रस्टी का मेरापन कुछ नहीं होता। जहां मेरापन नहीं वहां नष्टोमोहा स्वत: हो जाते। सदा निर्मोही अर्थात् सदा श्रेष्ठ सुखी। मोह में दुःख होता है। तो नष्टोमोहा बनो।

(17.10.1981)

प्रश्नः- जो सदा उड़ते पंछी होंगे उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तरः- वह चक्रवर्ती होंगे। आलराउन्ड पार्टधारी। उड़ती कला वाले ऐसे निर्बन्धन होंगे जो जहाँ भी सेवा हो वहाँ पहुंच जायेंगे। और हर प्रकार की सेवा में सफलतामूर्त बन जायेंगे। जैसे बाप आलरान्ड पार्टधारी है, सखा भी बन सकते तो बाप भी बन सकते, ऐसी उड़ती कला वाले जिस समय जो सेवा की आवश्यकता होगी उसमें सम्पन्न पार्ट बजा सकेंगे, इसको ही कहा जाता है- 'आलराउन्ड उड़ता पंछी'।

(03.11.1981)

प्रश्नः- कौन सी पहचान बुद्धि मे स्पष्ट है तो समर्थ आत्मा बन जायेंगे?

उत्तरः- समय की और स्वयं की पहचान अगर बुद्ध मे स्पष्ट है तो समर्थ आत्मा बन जायेंगें, क्योंकि यह संगम का समय ही है श्रेष्ठ तकदीर बनाने का। सारे कल्प वे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ तकदीर अभी ही बना सकते हो। संगम पर ही बाप द्वारा सर्व अधिकार प्राप्त होते हैं। तो अधिकारी आत्मा हो, श्रेष्ठ आत्मा हो, श्रेष्ठ प्रालब्ध

पाने वाले हो। सदा यह स्मृति में रखो तो समर्थ हो जायेंगे। समर्थ होने से मायाजीत बन जायेंगे। समर्थ आत्मा विघ्न-विनाशक होती है। संकल्प में भी विघ्न आ नहीं सकता। मास्टर सर्वशक्तिवान सदा विघ्न विनाशक होंगे।

(11.11.1981)

प्रश्नः- बाबा में ही संसार है, इसका भाव क्या है?

उत्तरः- वैसे भी बुद्धि जाती है तो संसार में ही जाती है ना! संसार में दो चीज़ें हैं - एक व्यक्ति दूसरा, वस्तु। बाप ही संसार है अर्थात् सर्व व्यक्तियों से जो प्राप्ति है वह एक बाप से है। और जो सर्व वस्तुओं से तृप्ति होती है वह भी बाप से है। तो संसार हो गया ना। सम्बन्ध भी बाप से, सम्पर्क भी बाप से। उठना, बैठना भी बाप से। तो संसार ही बाप हो गया ना।

(22.01.1982)

प्रश्नः- चलते-चलते पुरुषार्थ मे जब रूकावट आती है तो क्या करना चाहिए? रूकावट आने का कारण क्या होता है?

उत्तरः- जब कई प्रकार के पेपर्स सामने आते हैं, तो उन पेपर्स का सामना करने की शक्ति न होने के कारण पुरुषार्थ में रूकावट आ जाती है, ऐसे समय पर दूसरों का सहयोग लेना ज़रूरी होता है। जैसे कार में बैटरी जब थोड़ी ढीली हो जाती है, कार अपने आप नहीं चलती है तो दूसरों से थोड़ा धक्का लगवाते हैं ना! तो जिस भी आत्मा में आपका फेथ हो और समझो इनसे हमको मदद मिल सकती है तो उनसे थोड़ा-सा सहयोग लेकर आगे बढ़ जाना चाहिए। पहले उसे अपनी बात स्पष्ट सुनाना चहिंए कि ऐसे है, फिर सहयोग मिलने से चल पड़ेंगे। क्योंकि होता क्या है - जिस समय ऐसी स्टेज आती है उस समय डायरेक्ट बाप से सहयोग लेने की हिम्मत नहीं होती है, इसलिए फिर साकार में थोड़ासा सहयोग लेंगे तो फिर

डायरेक्ट लेने में मदद मिल जायेगी।

(14.03.1982)

प्रश्नः- बाबा के साथ हम बच्चे भी चक्कर पर (विश्व परिक्रमा पर) कैसे जा सकते हैं?

उत्तरः- इसके लिए बाप समान विश्व कल्याणकारी की बेहद की स्टेज में स्थित होना पड़े जब उस स्टेज में स्थित होंगे तो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे चित्र दिखाते हो - ग्लोब के ऊपर श्रीकृष्ण बैठा हुआ है, ऐसे मैं विश्व के ग्लोब पर बैठा हूँ। तो आटोमेटिकली विश्व का चक्र लग जायेगा। जैसे बहुत ऊँचे स्थान पर चले जाते हो तो चक्कर लगाना नहीं पड़ता लेकिन एक स्थान पर रहते सारा दिखाई देता है। ऐसे जब टॉप की स्टेज पर, बीजरूप स्टेज पर, विश्व कल्याणकारी स्थिति में स्थित होंगे तो सारा विश्व ऐसे दिखाई देगा जैसे छोटा 'बाल' है। तो सेकण्ड में चक्कर लगाकर आयेंगे क्योंकि ऊँची स्टेज पर रहेंगे। बाकी कभी-कभी दिव्य दृष्टि द्वारा अनुभव होता है प्रैक्टिकल चक्कर लगाने का। वह फिर सूक्ष्म आकारी स्वरूप द्वारा। जैसे प्लेन में चक्कर लगाकर आओ वैसे आकारी रूप द्वारा विश्व का चक्कर लगा सकते हो। दोनों प्रकार से चक्र लगा सकते। जब हैं ही विश्व के रचयिता के बच्चे तो सारी रचना का चक्र तो लगायेंगे ना!

(14.03.1982)

प्रश्नः- कई बार योग में बहुत अच्छी-अच्छी टचिंग होती हैं लेकिन यह बाबा की ही टचिंग है, उसका पता कैसे चले?

उत्तरः- 1.- बाबा की टचिंग हमेशा पॉवरफुल होगी और अनुभव होगा कि यह मेरी शक्ति से कुछ विशेष शक्ति है।

2.- जो बाबा की टचिंग होगी उसमें सहज सफलता की अनुभूति होगी।

3.- जो बाबा की टचिंग होगी उसमें कभी भी क्यों, क्या का क्वेश्चन नहीं होगा।

बिल्कुल स्पष्ट होगा। तो इन बातों से समझ लो कि यह बाबा की टचिंग है।

(14.03.1982)

प्रश्नः- हम बुद्धि से सरेन्डर हैं या नहीं, उसकी परख क्या है?

उत्तरः- बुद्धि से सरेन्डर का अर्थ है - बुद्धि जो भी निर्णय करे वह श्रीमत के अनुकूल हो। क्योंकि बुद्धि का कार्य है निर्णय करना। तो बुद्धि में श्रीमत के सिवाए और कोई बात आये ही नहीं। बुद्धि में सदा बाबा की स्मृति होने के कारण आटोमेटिकली निर्णय शक्ति वही होगी और उसकी प्रैक्टिकल निशानी यह होगी - कि उनकी जजमेन्ट सत्य होगी तथा सफलता वाली होगी। उनकी बात स्वयं को भी जँचेगी और औरों को भी जँचेगी कि बात बड़ी अच्छी कही है। सभी महसूस करेंगे कि इनकी बुद्धि बड़ी क्लीयर और सरेन्डर है। अपनी बुद्धि पर सन्तुष्टता होगी। क्वेश्चन नहीं होगा कि पता नहीं राइट है या रांग है।

(14.03.1982)

प्रश्नः- कई निश्चयबुद्धि बच्चे 4-5 साल चलने के बाद चले गये, यह लहर क्यों? इस लहर को कैसे समाप्त करें?

उत्तरः- जाने का विशेष कारण - सेवा में बहुत बिजी रहते है लेकिन सेवा और स्व का बैलेन्स खो देते हैं। तो जो अच्छे-अच्छे बच्चे रुक जाते हैं उन्हों का एक तो यह कारण होता और दूसरा उन्हों का कोई विशेष संस्कार ऐसा होता है जो शुरू से ही उसमें कमज़ोर होते हैं लेकिन उसे छिपाते हैं, युद्ध करते रहते हैं अपने आप से। बापदादा को वा निमित्त बनी हुई आत्माओं को अपनी कमज़ोरी स्पष्ट सुनाकर उसे खत्म नहीं करते। छिपाने के कारण वह बीमारी अन्दर ही अन्दर विकराल रूप लेती जाती है और आगे बढ़ने का अनुभव नहीं होता, फिर दिलशिकस्त हो छोड़ देते हैं। तीसरा कारण यह भी होता - कि आपस में संस्कार नहीं मिलते हैं। संस्कारों का टक्कर हो जाता है। अब इस लहर को समाप्त करने के लिए एक तो

सेवा के साथ-साथ स्व का फुल अटेन्शन चाहिए। दूसरा जो भी आते हैं उन्हों को बापदादा वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे बिल्कुल क्लीयर होना चाहिए। अगर सर्विस में थोड़ा भी अनुभव करो 'टू मच' है तो अपनी उन्नति का साधन पहले सोचना चाहिए और निमित्त बनी हुई आत्माओं को भी अपनी राय दे देनी चाहिए। जो नये आते हैं उन्हों को पहले इन बातों का अटेन्शन दिलाना चाहिए। अपने संस्कारों की चेकिंग पहले से ही करनी चाहिए। अगर किसी से अपना संस्कार टक्कर खाता है तो उससे किनारा कर लेना अच्छा है। जिस सरकमस्टांस में संस्कारों का टक्कर होता है, उनमें अलग हो जाना ही अच्छा है।

(14.03.1982)

प्रश्नः- अगर किसी स्थान पर सेवा की रिजल्ट नही निकलती है तो अपनी कमी है या धरनी ऐसी है?

उत्तरः- पहले तो सेवा के सब साधन सब प्रकार से यूज़ करके देखो। अगर सब तरह से सेवा करने के बाद भी कोई रिजल्ट नहीं तो धरनी का फर्क हो सकता है। अगर अपनी कोई कमज़ोरी है, जिस कारण सर्विस नहीं बढ़ती तो ज़रूर अन्दर मे दिल खाती है कि हमारे कारण सेवा नहीं होती। ऐसे समय में फिर एक दो का सहयोग ले फोर्स दिलाना चाहिए। यदि अपना कारण होगा तो उस धरनी से निकलने वाली आत्मायें भी ढीली ढाली होंगी। तीव्र पुरुषार्थ नहीं।

(14.03.1982)

प्रश्नः- प्यार के सागर से प्यार पाने की विधि क्या है?

उत्तरः- कई बच्चों की कम्पलेन है कि याद में तो रहते हैं लेकिन बाप का प्यार नहीं मिलता है। अगर प्यार नहीं मिलता है तो ज़रूर प्यार पाने की विधि में कमी है। प्यार का सागर बाप, उससे योग लगाने वाले प्यार से वंचित रह जाएँ, यह हो नहीं सकता। लेकिन प्यार पाने का साधन है - 'न्यारा बनो'। जब तक देह से वा देह के

सम्बन्धियों से न्यारे नहीं बने हो तब तक प्यार नहीं मिलता। इसलिए कहाँ भी लगाव न हो। लगाव हो तो एक सर्व सम्बन्धी बाप से। एक बाप दूसरा न कोई... यह सिर्फ कहना नहीं लेकिन अनुभव करना है। खाओ, पियो, सोओ... बाप-प्यारे अर्थात् न्यारे बनकर। देहधारियों से लगाव रखने से दुख अशान्ति की ही प्राप्ति हुई। जब सब सुन, चखकर देख लिया तो फिर उस ज़हर को दुबारा कैसे खा सकते? इसलिए सदा न्यारे और बाप के प्यारे बनो।

(17.03.1982)

प्रश्नः- मेहनत से छुटने की विधि क्या है?

उत्तरः- बापदादा सभी बच्चों को मेहनत से छुड़ाने आये हैं। आधाकल्प बहुत मेहनत की अब मेहनत समाप्त। उसकी सहज विधि सुनाई है, सिर्फ एक शब्द याद करो - 'मेरा बाबा'। मेरा बाबा कहने में कोई भी मेहनत नहीं। मेरा बाबा कहो तो, दुख देने वाला 'मेरा-मेरा' सब समाप्त हो जायेगा। जब अनेक मेरा है तो मुश्किल है, एक मेरा हो गया तो सब सहज हो गया। बाबा-बाबा कहते चलो तो भी सतयुग में आ जायेंगे। मेरा पोत्रा, मेरा धोत्रा, मेरा घर, मेरी बहू... अब यह जो मेरे-मेरे की लम्बी लिस्ट है इसे समाप्त करो। अनेकों को भुलाकर एक बाप को याद करो तो मेहनत से छूट आराम से खुशी के झूले में झूलते रहेंगे। सदा बाप की याद के आराम में रहो।

(17.03.1982)

प्रश्नः- बापदादा के गले में कौन से बच्चे माला के रूप में पिरोये रहते हैं?

उत्तरः- जिनके गले अर्थात् मुख द्वारा बाप के गुण, बाप का दिया हुआ ज्ञान वा बाप की महिमा निकलती रहती, जो बाप ने सुनाया वही मुख से आवाज़ निकलता, ऐसे बच्चे बापदादा के गले का हार बन गले में पिरोये रहते हैं।

(27.03.1982)

प्रश्नः- एक बल और एक भरोसे पर चलने वाले किस बात पर निश्चय रखकर चलते रहते हैं?

उत्तरः- एक बल एक भरोसा अर्थात् सदा निश्चय हो कि जो साकार की मुरली है, वही मुरली है, जो मधुबन से श्रीमत मिलती है वही श्रीमत है, बाप सिवाय मधुबन के और कहीं मिल नहीं सकता। सदा एक बाप की पढ़ाई में निश्चय हो। मधुबन से जो पढ़ाई का पाठ पढ़ाया जाता, वही पढ़ाई है, दूसरी कोई पढ़ाई नहीं। अगर कहाँ भोग आदि के समय सन्देशी द्वारा बाबा का पार्ट चलता है तो यह बिल्कुल रांग है, यह भी माया है, इसको 'एक बल एक भरोसा नहीं कहेंगे'। मधुबन से जो मुरली आती है उस पर ध्यान दो, नहीं तो और रास्ते पर चले जायेंगे। मधुबन में ही बाबा की मुरली चलती है, मधुबन में ही बाबा आते हैं इसलिए हरेक बच्चा यह सावधानी रखे, नहीं तो माया धोखा दे देगी।

(11.04.1982)

प्रश्नः- संगम पर ही तुम बच्चे बेगर टु प्रिन्स बन गये हो! कैसे?

उत्तरः- पुरानी दुनिया और पुराने संस्कारों से बेगर और ज्ञान के खज़ाने, शक्तियों के खज़ाने, सबके राज्य अधिकारी अर्थात् प्रिन्स। पहले अधीन आत्मा थे - कभी तन के, कभी मन के, कभी धन के। लेकिन अब अधीनता अर्थात् बेगरपन समाप्त हुआ, अब अधिकारी बन गए। अभी स्वराज्य - फिर विश्व का राज्य।

(11.04.1982)

प्रश्नः- कर्म करते भी कर्म बन्धन से मुक्त रहने की युक्ति क्या है?

उत्तरः- कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो। लवलीन आत्मा कर्म करते भी न्यारी रहेगी। कर्मयोगी अर्थात् याद में रहते हुए कर्म करने वाला सदा कर्मबन्धन मुक्त रहता है। ऐसे अनुभव होगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं। किसी भी प्रकार का बोझ वा थकावट महसूस नहीं होगी। तो कर्मयोगी

अर्थात् कर्म को खेल की रीति से न्यारे होकर करने वाला। ऐसे न्यारे बच्चे कर्मेन्द्रियों द्वारा कार्य करते बाप के प्यार में लवलीन रहने के कारण बन्धनमुक्त बन जाते हैं।

(13.04.1982)

प्रश्न:- संगमयुगी ब्राह्मण बच्चों को किस कर्त्तव्य में सदा तत्पर रहना चाहिए?

उत्तर:- समर्थ बनना है और दूसरों को भी समर्थ बनाना है, इसी कर्त्तव्य में सदा तत्पर रहो। क्योंकि व्यर्थ तो आधा कल्प किया, अब समय ही है समर्थ बनने और बनाने का। इसलिए व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म सब समाप्त, फुल स्टाप। पुराना चोपड़ा खत्म। जमा करने का साधन ही है - सदा समर्थ रहना। क्योंकि व्यर्थ से समय, शक्तियाँ और ज्ञान का नुकसान हो जाता है।

(18.04.1982)

प्रश्न:- एयरकन्डीशन की सीट बुक कराने का तरीका क्या है?

उत्तर:- एयरकन्डीशन की सीट बुक कराने के लिए बाप ने जो भी कन्डीशन्स बताई हैं उन पर सदा चलते रहो। अगर कोई भी कन्डीशन को अमल में नहीं लाया तो एयरकन्डीशन की सीट नहीं मिल सकेगी। जो कहते हैं कोशिश करेंगे तो ऐसे कोशिश करने वालों को भी यह सीट नहीं मिल सकती है।

(25.12.1982)

प्रश्न:- कौन सा एक गुण परमार्थ और व्यवहार दोनों में ही सर्व का प्रिय बना देता है?

उत्तर:- एक दो को आगे बढ़ाने का गुण अर्थात् 'पहले आप' का गुण परमार्थ और व्यवहार दोनों में ही सर्व का प्रिय बना देता है। बाप का भी यही मुख्य गुण है।

बाप कहते - 'बच्चे पहले आप'। तो इसी गुण में फ़ालो फ़ादर।

(25.12.1982)

प्रश्नः- सदा आगे बढ़ने का साधन क्या है?

उत्तरः- नालेज और सेवा। जो बच्चे नालेज को अच्छी रीति धारण करते हैं और सेवा की सदा रुचि बनी रहती है वह आगे बढ़ते रहते हैं। हज़ार भुजा वाला बाप आपके साथ है, इसलिए साथी को सदा साथ रखते आगे बढ़ते रहो।

(18.02.1983)

प्रश्नः- प्रवृत्ति में जो सदा समर्पित होकर रहते हैं - उनके द्वारा कौन सी सेवा स्वतः हो जाती है?

उत्तरः- ऐसी आत्माओं के श्रेष्ठ सहयोग से सेवा का वृक्ष फलीभूत हो जाता है। सबका सहयोग ही वृक्ष का पानी बन जाता है। जैसे वृक्ष को पानी मिले तो वृक्ष से फल कितना अच्छा निकलता है, ऐसे श्रेष्ठ सहयोगी आत्माओं के सहयोग से वृक्ष फलीभूत हो जाता है। तो ऐसे बापदादा के दिलतख्तनशीन, सेवा की धुन में सदा रहने वाले, प्रवृत्ति में भी समर्पित रहने वाले बच्चे हो ना।

(18.02.1983)

प्रश्नः- परखने की शक्ति किस आधार पर प्राप्त हो सकती है?

उत्तरः- क्लीयर बुद्धि। ज्यादा बातें सोचने के बजाए एक बाप की याद में रहो, बाप से क्लीयर रहो तो परखने की शक्ति प्राप्त हो जायेगी और उसके आधार पर सहज ही हर बात का निर्णय कर लेंगे। जिस समय जैसी परिस्थिति, जैसा सम्पर्क सम्बन्ध वाले का मूड, उसी समय पर उस प्रमाण चलना, उसको फौरन परख लेना, यह भी बहुत बड़ी शक्ति है।

(21.02.1983)

प्रश्नः- शमा पर फिदा होने वाले सच्चे परवाने की निशानी क्या होगी?
उत्तर :- शमा पर जो फिदा हो चुके वह स्वयं भी शमा के समान हो गये। समा गये तो समान हो गये। जैसे शमा सबको रास्ता बताती है ऐसे शमा समान रोशनी द्वारा रास्ता बताने वाले। रास्ते में भटकने वाले नहीं। यह करें वा वह करें, यह क्वेश्चन समाप्त। फुलस्टाप आ जाता तो याद और सेवा इसी में रहो, चक्र सब समाप्त। कोई भी चक्कर रहा हुआ होगा तो चक्र लगाने जायेंगे। कभी सम्बन्ध का चक्र, कभी अपने स्वभाव संस्कार का चक्र, अगर सब चक्र समाप्त हो गये, पूरा फिदा हो गये तो फिदा होना अर्थात् जल मरना। उन्हों को सिवाए शमा के और कुछ नहीं।

(21.02.1983)

प्रश्नः- बाप को किन बच्चों पर बहुत नाज रहता है?
उत्तरः- जो बच्चे कमाई करने वाले होते, ऐसे कमाई करने वाले बच्चों पर बाप को बहुत नाज रहता, एक एक सेकण्ड में पद्मों से भी ज़्यादा कमाई जमा कर सकते हो। जैसे एक के आगे एक बिन्दी लगाओ तो 10 हो जाता, फिर एक बिन्दी लगाओ 100 हो जाता, ऐसे एक सेकण्ड बाप को याद किया, सेकण्ड बीता और बिन्दी लग गई, इतनी बड़ी कमाई अभी ही जमा करते हो फिर अनेक जन्म तक खाते रहेंगे।

(30.03.1983)

प्रश्नः- आप बच्चों की कमाई अखुट और अविनाशी है, कैसे?
उत्तरः- आप ऐसी कमाई करते हो जो कभी कोई छीन नहीं सकता। कोई गड़बड़ हो नहीं सकती। दूसरी कमाई में तो डर रहता है, इस कमाई को अगर कोई छीनना भी चाहे तो भी आपको खुशी होगी क्योंकि वह भी कमाई वाला हो जायेगा। अगर कोई लूटने आये तो और ही खुश होंगे, कहेंगे लो। तो इससे और ही सेवा हो

जायेगी। तो ऐसी कमाई करने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो।

(03.04.1983)

प्रश्नः- सहजयोगी जीवन की विशेषता क्या है?

उत्तरः- योगी जीवन अर्थात् सदा सुखमय जीवन। तो जो सहजयोगी हैं वह सदा-सुख के झूले में झूलने वाले होते हैं। जब सुखदाता बाप ही अपना हो गया तो सुख ही सुख हो गया ना। तो सुख के झूले में झूलते रहो। सुखदाता बाप मिल गया, सुख की जीवन बन गई, सुख का संसार मिल गया, यही है योगी जीवन की विशेषता जिसमें दुख का नाम निशान नहीं।

(07.04.1983)

प्रश्नः- बुजुर्ग और अनपढ़ बच्चों को किस आधार पर सेवा करनी है?

उत्तरः- अपने अनुभव के आधार पर। अनुभव की कहानी सबको सुनाओ। जैसे घर में दादी वा नानी बच्चों को कहानी सुनाती है ऐसे आप भी अनुभव की कहानी सुनाओ, क्या मिला है, क्या पाया है... यही सुनाना है। यह सबसे बड़ी सेवा है। जो हरेक कर सकता है। याद और सेवा में ही सदा तत्पर रहो यही है बाप समान कर्त्तव्य।

(07.04.1983)

प्रश्नः- धर्मराजपुरी क्या है उसका अनुभव कब और कैसे होता है?

उत्तरः- धर्मराजपुरी कोई अलग स्थान नहीं है। सजाओं के अनुभव को ही धर्मराजपुरी कहते हैं। लास्ट में अपने पाप सामने आते हैं, और चैतन्य में यमदूत नहीं है, लेकिन अपने ही पाप डरावने रूप में सामने आते हैं। उस समय पश्चाताप और वैराग की घड़ी होती है। उस समय छोटे-छोटे पाप भी भूत की तरह लगते हैं। जिसको ही कहते हैं - यमदूत आये, काले-काले आये, गोरे-गोरे आये...ब्रह्मा बाप भी

आफीशियल रूप में सामने दिखाई देते और छोटा सा पाप भी बड़े विकराल रूप में दिखाई देता, जैसे कई आइने होते हैं जिसमें छोटा आदमी भी मोटा या लम्बा दिखाई देता है, ऐसे अन्त समय में पश्चाताप की त्राहि-त्राहि होगी। अन्दर ही कष्ट होगा। जलन होगी। ऐसे लगेगा जैसे चमड़ी को कोई खींच रहा है। यह फीलिंग आयेगी। ऐसे ही सब पापों के सज़ाओं की अनुभूति होगी जो बहुत ही कड़ी है। इसको ही 'धर्मराज पुरी' कहा गया है।

(11.04.1983)

प्रश्न:- कौन सी स्मृति सदा रहे तो जीवन में कभी भी दिलशिकस्त नहीं बन सकते?

उत्तर:- मैं साधारण आत्मा नहीं हूँ, मैं शिव शक्ति हूँ, बाप मेरा और मैं बाप की। इसी स्मृति में रहो तो कभी भी अकेलापन अनुभव नहीं होगा। कभी दिलशिकस्त नहीं होंगे। सदा उमंग उत्साह रहेगा। 'शिव-शक्ति' का अर्थ ही है शिव और शक्ति कम्बाइन्ड। जहाँ सर्वशक्तिवान, हज़ार भुजाओं वाला बाप है वहाँ सदा ही उमंग उत्साह साथ है।

(13.04.1983)

प्रश्न:- ब्राह्मण जीवन में मुख्य फाउन्डेशन कौन सा है?

उत्तर:- स्मृति ही ब्राह्मण जीवन में फाउन्डेशन है। स्मृति का सदा अटेन्शन। स्मृति सदा समर्थ रहे तो सदा विजयी हैं। जैसे शरीर के लिए श्वांस फाउन्डेशन है ऐसे ब्राह्मण जीवन के लिए 'स्मृति' फाउन्डेशन है, सदा स्मृति रहें - यह ब्राह्मण जन्म विशेष जन्म है, साधारण नहीं। ऊँचे ते ऊँचे बाप के साथ ऊँचे पार्टधारी हैं। तो ऊँचे पार्टधारी का हर संकल्प, हर बोल विशेष, साधारण नहीं हो सकता।

(30.04.1983)

प्रश्नः- संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य क्या है? उस लक्ष्य को प्राप्त करने की विधि क्या है?

उत्तरः- संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है सदा सन्तुष्ट रहना और दूसरों को सन्तुष्ट करना। ब्राह्मण अर्थात् समझदार, स्वयं भी सन्तुष्ट रहेंगे और दूसरों को भी रखेंगे। अगर दूसरे के असन्तुष्ट करने से असन्तुष्ट होते तो संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का सुख नहीं ले सकते। शक्ति स्वरूप बन दूसरों के वायुमण्डल से स्वयं को किनारे कर लेना अर्थात् अपने को सेफ कर लेना यही साधन है इस लक्ष्य को प्राप्त करने का। दूसरे की असन्तुष्टता से स्वयं को असन्तुष्ट नहीं होना है। दूसरा किसी भी प्रकार से असन्तुष्ट करने के निमित्त बने तो स्वयं को किनारा करके आगे बढ़ते जाना है, रूकना नहीं है।

(23.05.1983)

प्रश्नः- कौन से संस्कार अपने निजी संस्कार बना लो तो सदा उड़ती कला में उड़ते रहेंगे?

उत्तरः- अपना निजी संस्कार बनाओ कि हर बात में मुझे आगे बढ़ना है। दूसरा बढ़े या न बढ़े। दूसरे के पीछे स्वयं को नीचे नहीं आना है। सहानुभूति के कारण सहयोग देना दूसरी बात है लेकिन दूसरे के कारण स्वयं नीचे आ जाना यह ठीक नहीं। न व्यर्थ सुनो, न देखो। सेवा के भाव से न्यारा होकर देखो। दूसरे के कारण अपना समय और खुशी न गंवाओ तो सदा उड़ती कला में जाते रहेंगे।

(23.05.1983)

प्रश्नः- सबसे बड़ा खज़ाना कौन सा है? जिससे ही ज्ञान और योग की परख होती है?

उत्तरः- सबसे बड़ा खज़ाना है - 'खुशी'। चाहे कितना भी ज्ञान हो, योग हो लेकिन खुशी की प्राप्ति नहीं तो ज्ञान ठीक नहीं। कोई भी परिस्थिति आ जाए खुशी गायब

नहीं हो सकती। अविनाशी बाप का अविनाशी खज़ाना मिला है इसलिए खुशी कभी गायब नहीं हो सकती। योग लगाते लेकिन खुशी नहीं तो योग ठीक नहीं। आपकी खुशी देख दूसरे आपसे पूछें कि आपको क्या मिला है! यही ज्ञान और योग की प्रत्यक्षता का साधन है।

(03.12.1983)

प्रश्न:- किस लगन के आधार पर विघ्नों की समाप्ति स्वत: हो जाती है?
उत्तर:- एक बाप दूसरा न कोई, इसी लगन में मगन रहो तो विघ्न टिक नहीं सकता। विघ्न है तो लगन नहीं। विघ्न भल आयें लेकिन उसका प्रभाव न पड़े। जब स्वयं प्रभावशाली आत्मा बन जाते तो किसी का प्रभाव नहीं पड़ सकता। जैसे सूर्य को कोई कितना भी छिपाये तो छिप नहीं सकता! सदा चमकता रहता है। ऐसे ही प्रभावशाली आत्माओं को कोई भी प्रभाव अपने तरफ खींच नहीं सकता। तो सदा 'एक बाप दूसरा न कोई', इसी लगन में मगन रहने वाले, यही विशेष संगमयुग का अनुभव है।

(03.12.1983)

प्रश्न:- सदा अपने को श्रेष्ठ पार्टधारी आत्मायें हैं - ऐसा अनुभव करते हो?
उत्तर:- श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ कौन? बाप। और बाप के साथ पार्ट बजाने वाले क्या हुए? विशेष पार्टधारी। ऊँचे ते ऊँचे बाप के साथ पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं, यही सदा याद रहे। कोई कितना भी कई जन्म पुरुषार्थ करे लेकिन आप जैसा ऊँच पार्टधारी नहीं बन सकता। महात्मा बन सकते, धर्म पिता बन सकते। वह मैसेन्जर हैं, आप बच्चे हो। कितना रात-दिन का फर्क है। ऐसे अपने श्रेष्ठ भाग्य को सदा स्मृति में रखते हो वा कभी भूलता, कभी याद रहता? जब हैं ही बच्चे तो भूल कैसे सकता! अविनाशी वर्सा प्राप्त होता है तो याद भी अविनाशी रहेगी। घर बैठे बिना मेहनत के बाप ने स्वयं आकर अपनी पहचान दी और अपना बनाया, आप लोग तो

भटकते रहे। परिचय ही नहीं था, यथार्थ रूप का मालूम ही नहीं था, जिसको आया उसको ही बाप मान लिया। बड़ा भाई बाप समान हो सकता है लेकिन भाई से कोई वर्सा नहीं मिल सकता। पहचान न होने के कारण ढूँढते रहे। बाप ने जब परिचय दिया तब पाया। तो ऐसे खुशी के खज़ाने में सदा खेलते रहो, मिट्टी से कभी नहीं खेलना। छोटे कुल के बच्चे मिट्टी से खेलते हैं। रॉयल बच्चे मिट्टी से नहीं खेल सकते। वह तो सदा रत्नों से खेलेंगे।

(03.12.1983)

प्रश्नः- मायाजीत बनने का सहज साधन क्या है?
उत्तरः- मायाजीत बनने के लिए अपनी बुराईयों पर क्रोध करो। जब क्रोध आये तो आपस में नहीं करना, बुराईयों से क्रोध करो, अपनी कमज़ोरियों पर क्रोध करो तो मायाजीत सहज बन जायेंगे।

(07.12.1983)

प्रश्नः- गाँव वालों को देख बापदादा विशेष खुश होते हैं, क्यों?
उत्तरः- क्योंकि गांव वाले बहुत भोले होते हैं। बाप को भी भोलानाथ कहते हैं। जैसे भोलानाथ बाप वैसे भोले गांव वाले तो सदा यह ख़ुशी रहे कि हम विशेष भोलानाथ के प्यारे हैं।

(07.12.1983)

प्रश्नः- सेवा का सहज साधन अथवा सर्व को आकर्षित करने का सहज साधन वा पुरुषार्थ कौनसा है?
उत्तरः- हर्षितमुख चेहरा! जो सदा हर्षित रहता वह स्वत: ही सर्व को आकर्षित करता है। और सहज ही सेवा के निमित्त भी बन जाता है। हर्षितमुखता खुशी की निशानी है। खुशी का चेहरा देख स्वत: पूछेंगे क्या पाया, क्या मिला! तो सदा

खुशी में रहो। क्या थे, क्या बन गये, इससे ही सेवा होती रहेगी।

(12.12.1983)

प्रश्नः- तिलक का अर्थ क्या है? किस तिलक को धारण करो तो सदा नशे और खुशी में रहेंगे?

उत्तरः- तिलक का अर्थ है - 'स्मृति स्वरुप'। तो सदा स्मृति रहे कि हम तख्तनशीन हैं। हम वह सिकीलधी आत्मायें हैं जो प्रभु तख्त के अधिकारी बनी हैं। इस तिलक को धारण करने से सदा खुशी और नशे में रहेंगे। वैसे भी कहा जाता है - 'तख्त और बख्त'। तख्तनशीन बनने का बख्त अर्थात् भाग्य मिला। तो सदा श्रेष्ठ तख्त और बख्त वाली आत्माएँ हैं, यही नशा और ख़ुशी सदा रहे।

(12.12.1983)

प्रश्नः- संगमयुग की कौन-सी विशेषता है जो सारे कल्प में नहीं हो सकती?

उत्तरः- संगमयुग पर ही हरेक को ठमेरा बाबाठ कहने का अधिकार है। एक को ही सब 'मेरा बाबा' कहते हैं। मेरा कहना अर्थात् अधिकारी बनना। संगम पर ही हरेक को एक बाप से मेरे-पन का अनुभव होता है। जहाँ मेरा बाबा कहा वहाँ वर्से के अधिकारी बन गये। सब कुछ मेरा हुआ। हद का मेरा नहीं, बेहद का मेरा। तो बेहद के मेरे-पन की ख़ुशी में रहो।

(14.12.1983)

प्रश्नः- समीप आत्मा की मुख्य निशानी क्या होगी?

उत्तरः- समीप आत्माएँ अर्थात् सदा बाप के समान हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म करने वाली। जो समीप होंगे वह समान भी अवश्य होंगे। दूर वाली आत्माएँ थोड़ी अंचली लेने वाली होंगी। समीप वाली आत्माएँ पूरा अधिकार लेने वाली

होंगी। तो जो बाप के संकल्प, बोल, वह आपके। इसको कहा जाता है - ‘समीप’। अच्छा।

(14.12.1983)

प्रश्नः- महा-तपस्या कौन सी है? जिस तपस्या का बल विश्व को परिवर्तन कर सकता है?

उत्तरः- ‘एक बाप दूसरा न कोई’ - यह है महा-तपस्या। ऐसी स्थिति में स्थित रहने वाले महातपस्वी हुए। तपस्या का बल श्रेष्ठ बल गाया जाता है। जो इस तपस्या में रहते - ‘एक बाप दूसरा न कोई’, उनमें बहुत बल है। इस तपस्या का बल विश्व परिवर्तन कर लेता है। हठयोगी एक टांग पर खड़े होकर तपस्या करते हैं लेकिन आप बच्चे एक टांग पर नहीं, एक की स्मृति में रहते हो, बस - एक ही एक। ऐसी तपस्या विश्व-परिवर्तन कर देगी। तो ऐसे विश्व-कल्याणकारी अर्थात् महान तपस्वी बनो।

(19.12.1983)

प्रश्नः- किसी भी बाप की उलझन, मन में उलझन पैदा न करे उसका साधन क्या है?

उत्तरः- समर्थ बाप को सदा साथी बनाकर रखो तो कैसी भी उलझन वाली बात में मन उलझन में नहीं आयेगा। बड़ी बात छोटी, पहाड़ भी राई हो जायेगा। बस सदा याद रहे कि मेरा बाबा, मेरी सेवा, जो बाप का सो मेरा, जो बाप का कर्म वह मेरा कर्म, जो बाप के गुण वह मेरे गुण। गुण, संस्कार, श्रेष्ठ कर्म जब सारी प्रापर्टी के मालिक हो गये, जो बाप की वह आपकी हो गई तो सदा खुशी रहेगी, कभी भी कोई उलझन मन को उलझायेगी नहीं।

(18.01.1984)

प्रश्नः- ऐसा पावरफुल वातावरण बनाने की युक्ति क्या है?

उत्तरः- स्वयं पावरफुल बनो। उसके लिए अमृतवेले से लेकर हर कर्म में अपनी स्टेज शक्तिशाली है या नहीं, उसकी चेकिंग के ऊपर और थोड़ा विशेष अटेन्शन। दूसरों की सेवा में या सेवा के प्लैन्स में बिजी होने से अपनी स्थिति में कहाँ-कहाँ हल्कापन आ जाता है। इसलिए यह वातावरण शक्तिशाली नहीं होता। सेवा होती है लेकिन वातावरण शक्तिशाली नहीं होता है। इसके लिए अपने ऊपर विशेष अटेन्शन रखना पड़े। कर्म और योग, कर्म के साथ शक्तिशाली स्टेज, इस बैलेन्स की थोड़ी कमी है। सिर्फ सेवा में बिजी होने के कारण स्व की स्थिति शक्तिशाली नहीं रहती। जितना समय सेवा में देते हो, जितना तन-मन-धन सेवा में लगाते हैं, उसी प्रमाण एक का लाख गुणा जो मिलना चाहिए वह नहीं मिलता है। इसका कारण है, कर्म और योग का बैलेन्स नहीं है। जैसे सेवा के प्लैन बनाते हो, पर्चे छपाते हो, टी.वी., रेडियो में करना है। जैसे वह बाहर के साधन बनाते हो वैसे पहले अपनी मंसा शक्तिशाली का साधन विशेष होना चाहिए। यह अटेन्शन कम है। फिर कह देते हो, बिजी रहे इसलिए थोड़ा-सा मिस हो गया। फिर डबल फायदा नहीं हो सकता।

(24.02.1984)

प्रश्नः- कई ब्राह्मण आत्माओं पर भी ईविल सोल्स का प्रभाव पड़ जाता है, उस समय क्या करना चाहिए?

उत्तरः- इसके लिए सेवाकेन्द्र का वातावरण बहुत शक्तिशाली सदा रहना चाहिए। और साथ अपना भी वातावरण शक्तिशाली रहे। फिर यह ईविल स्प्रिट कुछ नहीं कर सकती है। यह मन को पकड़ती हैं। मन की शक्ति कमजोर होने के कारण ही इसका प्रभाव पड़ जाता है। मानो कोई कमजोर है और उसके ऊपर प्रभाव पड़ भी जाता है तो शुरु से पहले ही उसके प्रति ऐसे योगयुक्त आत्मायें विशेष योग भट्ठी रख करके उसको शक्ति दें और वह जो योगयुक्त ग्रुप है वह समझे कि हमको यह

विशेष कार्य करना है, जैसे और प्रोग्राम होते हैं वैसे यह प्रोग्राम इतना अटेन्शन से करें तो फिर शुरु में उस आत्मा को ताकत मिलने से बच सकती हैं। भले वह आत्मा परवश होने के कारण योग में नहीं भी बैठ सके, क्योंकि उसके ऊपर दूसरे का प्रभाव होता है, तो वह भले ही न बैठे लेकिन आप अपना कार्य निश्चय बुद्धि हो करके करते रहो। तो धीरे-धीरे उसकी चंचलता शान्त होती जायेगी। वह ईविल आत्मा पहले आप लोगों के ऊपर भी वार करने की कोशिश करेगी लेकिन आप समझो यह कार्य करना ही है, डरो नहीं तो धीरे-धीरे उसका प्रभाव हट जायेगा।

(24.02.1984)

प्रश्न:- सेवाकेन्द्र पर अगर कोई प्रवेशता वाली आत्मायें ज्ञान सुनने के लिए आती हैं तो क्या करना चाहिए?

उत्तर:- अगर ज्ञान सुनने से उसमें थोड़ा-सा भी अन्तर आता है या सेकण्ड के लिए भी अनुभव करती है तो उसको उल्लास में लाना चाहिए। कई बार आत्मायें थोड़ा-सा ठिकाना न मिलने के कारण भी आपके पास आती हैं, बदलने के लिए आया है या वैसे ही पागलपन में जहाँ रास्ता मिला, आ गया है यह परखना चाहिए। क्योंकि कई बार ऐसे पागल होते हैं जो जहाँ भी देखेंगे दरवाजा खुला है वहाँ जायेंगे। होश में नहीं होते हैं। तो ऐसे भी कई आयेंगे लेकिन उसको पहले परखना है। नहीं तो उसमें टाइम वेस्ट हो जायेगा। बाकी कोई अच्छे लक्ष्य से आया है, परवश है तो उसको शक्ति देना अपना काम है। लेकिन ऐसी आत्माओं की कभी भी अकेले में अटेन्ड नहीं करना। कुमारी कोई ऐसी आत्मा को अकेले में अटेन्ड न करें क्योंकि कुमारी को अकेला देख पागल का पागलपन और निकलता है। इसलिए ऐसी आत्माये अगर समझते हो योग्य हैं तो उन्हें ऐसा टाइम दो जिस टाइम दो-तीन और हों या कोई जिम्मेवार, कोई बुजुर्ग ऐसा हो तो उस समय उसको बुलाकर बिठाना चाहिए। क्योंकि जमाना बहुत गन्दा है और बहुत बुरे संकल्प वाले लोग हैं। इसलिए थोड़ा अटेन्शन रखना भी जरुरी है। इसमें बहुत क्लीयर बुद्धि

चाहिए। क्लीयर बुद्धि होगी तो हरेक के वायब्रेशन से कैच कर सकेंगे कि यह किस एम से आया है।

(24.02.1984)

प्रश्नः- आजकल किसी-किसी स्थान पर चोरी और भय का वातावरण बहुत हैं - उनसे कैसे बचे?

उत्तरः- इसमें योग की शक्ति बहुत चाहिए। मान लो कोई आपको डराने के ख्याल से आता है तो उस समय योग की शक्ति दो। अगर थोड़ा कुछ बोलेंगे तो नुकसान हो जायेगा। इसलिए ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति दो। उस समय पर अगर थोड़ा भी कुछ कहा तो उन्हों में जैसे अग्नि में तेल डाला। आप ऐसे रीति से रहो जैसे बेपरवाह हैं, हमको कोई परवाह नहीं है। जो करता है उसको साक्षी होकर अन्दर शान्ति की शक्ति दो तो फिर उसके हाथ नहीं चलेंगे। वह समझेंगे इनको तो कोई परवाह नहीं है। नहीं तो डराते हैं, डर गये या हलचल में आये तो वह और ही हलचल में लाते हैं। भय भी उन्हों को हिम्मत दिलाता है इसलिए भय में नहीं आना चाहिए। ऐसे टाइम पर साक्षीदृष्टा की स्थिति यूज करनी है। अभ्यास चाहिए ऐसे टाइम।

(24.02.1984)

प्रश्नः- ब्लैसिंग जो बापदादा द्वारा मिलती है, उनका गलत प्रयोग क्या है?

उत्तरः- कभी-कभी जैसे बापदादा बच्चों को सर्विसएबल या अनन्य कहते हैं या कोई विशेष टाइटल देते हैं तो उस टाइटल को मिसयूज कर लेते हैं, समझते हैं मैं तो ऐसा बन ही गया। मैं तो हूँ ही ऐसा। ऐसा समझकर अपना आगे का पुरुषार्थ छोड़ देते हैं, इसको कहते हैं - मिसयूज अर्थात् गलत प्रयोग। क्योंकि जो बापदादा वरदान देते हैं, उस वरदान को स्वयं के प्रति और सेवा के प्रति लगाना यह है सही

रीति से यूज करना और अल-बेला बन जाना यह है मिसयूज करना।

(24.02.1984)

प्रश्नः- बाइबिल में दिखाते हैं - अन्तिम समय में एन्टी क्राइस्ट का रुप होगा, इसका रहस्य क्या है?

उत्तरः- एन्टी क्राइस्ट का अर्थ है उस धर्म के प्रभाव को कम करने वाले। आजकल देखो उसी क्रिश्चियन धर्म में क्रिश्चियन धर्म की वैल्यू को कम समझते जा रहे हैं, उसी धर्म वाले अपने धर्म को इतना शक्तिशाली नहीं समझते और दूसरों में शक्ति ज्यादा अनुभव करते हैं, यही एन्टी क्राइस्ट हो गये। जैसे आजकल के कई पादरी ब्रह्मचर्य को महत्व नहीं देते और उन्हों को गृहस्थी बनाने की प्रेरणा देने शुरु कर दी है तो यह उसी धर्म वाले जैसे एन्टी क्राइस्ट हुए।

(24.02.1984)

प्रश्नः- फरिश्ता बनने के लिए किस बन्धन से मुक्त होना पड़ेगा?

उत्तरः- मन के बन्धनों से मुक्त बनो। मन के व्यर्थ संकल्प भी फरिश्ता नहीं बनने देंगे। इसलिए फरिश्ता अर्थात् जिसका मन के व्यर्थ संकल्पों से भी रिश्ता नहीं। सदा यह याद रहे कि हम फरिश्ते किसी रिश्ते में बंधने वाले नहीं।

(01.05.1984)

प्रश्नः- सेवा का श्रेष्ठ साधन क्या होना चाहिए?

उत्तरः- सेवा का सबसे तीखा साधन है - 'समर्थ संकल्प से सेवा'। समर्थ संकल्प भी हों, बोल भी हों और कर्म भी हों। तीनों साथ-साथ कार्य करें। यही शक्तिशाली साधन है। वाणी में आते हो तो शक्तिशाली संकल्प की परसेन्टेज कम हो जाती है या वह परसेन्टेज होती है तो वाणी की शक्ति में फर्क पड़ जाता है। लेकिन नहीं। तीनों ही साथ-साथ हों। जैसे कोई भी पेशन्ट को एक ही साथ कोई नब्ज देखता

है, कोई आपरेशन करता है... इकट्ठा-इकट्ठा करते हैं। नब्ज देखने वाला पीछे देखे और आपरेशन वाला पहले कर ले तो क्या होगा? इकट्ठा-इकट्ठा कितना कार्य चलता है। ऐसे ही रूहानियत के भी सेवा के साधन इकट्ठा-इकट्ठा साथ-साथ चलें। बाकी सेवा के प्लैन बनाये हैं, बहुत अच्छा। लेकिन ऐसा कोई साधन बनाओ जो सभी समझें कि हाँ, यह रूहानी डाक्टर सदा के लिए हैल्दी बनाने वाले हैं।

(06.01.1986)

प्रश्नः- जो अनेक बार विजयी आत्मायें हैं, उन्हों की निशानी क्या होगी?

उत्तरः- उन्हें हर बात बहुत सहज और हल्की अनुभव होगी। जो कल्प-कल्प की विजयी आत्मायें नहीं उन्हें छोटा-सा कार्य भी मुश्किल अनुभव होगा। सहज नहीं लगेगा। हर कार्य करने के पहले स्वयं को ऐसे अनुभव करेंगे जैसे यह कार्य हुआ ही पड़ा है। होगा या नहीं होगा यह क्वेश्चन नहीं उठेगा। हुआ ही पड़ा है यह महसूसता सदा रहेगी। पता है सदा सफलता है ही, विजय है ही - ऐसे निश्चयबुद्धि होंगे। कोई भी बात नई नहीं लगेगी, बहुत पुरानी बात है। इसी स्मृति से स्वयं को आगें बढ़ाते रहेंगे।

(06.01.1986)

प्रश्नः- डबल लाइट बनने की निशानी क्या होगी?

उत्तरः- डबल लाइट आत्मायें सदा सहज उड़ती कला का अनुभव करती है। कभी रुकना और कभी उड़ना ऐसे नहीं। सदा उड़ती कला के अनुभवी ऐसी डबल लाइट आत्मायें ही डबल ताज के अधिकारी बनते हैं। डबल लाइट वाले स्वतः ही ऊँची स्थिति का अनुभव करते हैं। कोई भी परिस्थिति आवे, याद रखो - हम डबल लाइट हैं। बच्चे बन गये अर्थात् हल्के बन गये। कोई भी बोझ नहीं उठा सकते।

(06.01.1986)

प्रश्नः- जो समीप सितारे हैं उनके लक्षण क्या होंगे?

उत्तरः- उनमें समानता दिखाई देगी। समीप सितारों में बापदादा के गुण और कर्तव्य प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। जितनी समीपता उतनी समानता होगी। उनका मुखड़ा बापदादा का साक्षात्कार कराने वाला दर्पण होगा। उनको देखते ही बापदादा का परिचय प्राप्त होगा। भले देखेंगे आपको लेकिन आकर्षण बापदादा की तरफ होगी। इसको कहा जाता है - 'सन शोज फ़ादर'। स्नेही के हर कदम में, जिससे स्नेह है उसकी छाप देखने में आती है। जितना हर्षित मूर्त उतना आकर्षण मूर्त बन जाते हैं।

(15.01.1986)

प्रश्नः- सच्चे सेवाधारी किसको कहा जाता है?

उत्तरः- सेवा स्थिति को डगमग करे, वह सेवा नहीं है। कई सोचते हैं सेवा में नीचे ऊपर भी बहुत होते हैं। विघ्न भी सेवा में आते हैं और निर्विघ्न भी सेवा ही बनाती है। लेकिन जो सेवा विघ्न रूप बने वह सेवा नहीं। उसको सच्ची सेवा नहीं कहेंगे। नामधारी सेवा कहेंगे। सच्ची सेवा सच्चा हीरा है। जैसे सच्चा हीरा कभी चमक से छिप नहीं सकता। ऐसे सच्चा सेवाधारी सच्चा हीरा है। चाहे झूठे हीरे में चमक कितनी भी बढ़िया हो लेकिन मूल्यवान कौन? मूल्य तो सच्चे का होता है ना। झूठे का तो नहीं होता। अमूल्य रत्न सच्चे सेवाधारी हैं। अनेक जन्म मूल्य सच्चे सेवाधारी का है। अल्पकाल की चमक का शो नामधारी सेवा है। इसलिए सदा सेवाधारी बन सेवा से विश्व-कल्याण करते चलो। समझा - सेवा का महत्त्व क्या है! कोई कम नहीं है। हरेक सेवाधारी अपनी-अपनी विशेषता से विशेष सेवाधारी है। अपने को कम भी नहीं समझो और फिर करने से नाम की इच्छा भी नहीं रखो। सेवा को विश्व-कल्याण के अर्पण करते चलो। वैसे भी भक्ति में जो गुप्त दानी पुण्य आत्मायें होती हैं वो यही संकल्प करती हैं कि - सर्व के भले प्रति हो! मेरे प्रति हो, मुझे फल मिले, नहीं, सर्व को फल मिले। सर्व की सेवा में अर्पण हो। कभी

अपनेपन की कामना नहीं रखेंगे। ऐसे ही सर्व प्रति सेवा करो। सर्व के कल्याण की बैंक में जमा करते चलो। तो सभी क्या बन जायेंगे? - 'निष्काम सेवाधारी'। अभी कोई ने नहीं पूछा तो 2500 वर्ष आपको पूछेंगे। एक जन्म में कोई पूछे या 2500 वर्ष कोई पूछे, तो ज़्यादा क्या हुआ। वह ज्यादा है ना। हद के संकल्प से परे होकर बेहद के सेवाधारी बन बाप के दिलतख्तनशीन बेपरवाह बादशाह बन, संगमयुग की खुशियों को, मौजों को मनाते चलो। कभी भी कोई सेवा उदास करे तो समझो - वह सेवा नहीं है। डगमग करे, हलचल में लाये तो वह सेवा नहीं है। सेवा तो उड़ाने वाली है। सेवा बेगमपुर का बादशाह बनाने वाली है। ऐसे सेवाधारी हो ना? बेपरवाह बादशाह, बेगमपुर के बादशाह। जिसके पीछे सफलता स्वयं आती है। सफलता के पीछे वह नहीं भागता। सफलता उसके पीछे-पीछे है।

(22.02.1986)

प्रश्नः- ब्रह्मा बाप ने पहला-पहला कदम क्या उठाया?

उत्तरः- मैं और मेरा-पन का समर्पण समारोह मनाया किसी भी बात में 'मैं' के बजाए सदा नेचुरल भाषा में, साधारण भाषा में भी 'बाप' शब्द ही सुना। 'मैं' शब्द नहीं। मैं कर रहा हूँ, नहीं। बाबा करा रहा है। बाबा चला रहा है, मै कहता हूँ, नहीं। बाबा कहता है। हद के कोई भी व्यक्ति या वैभव से लगाव यह 'मेरापन' है। तो मेरेपन को और मैं-पन को समर्पण करना इसको ही कहते हैं - 'बलि चढ़ना'। बलि चढ़ना अर्थात् - महाबली बनना। तो यह समर्पण होने की निशानी है।

(07.03.1986)

प्रश्नः- सन्तुष्टता की निशानी कौन-सी है?

उत्तरः- वह मन से, दिल से, सर्व से, बाप से, ड्रामा से सन्तुष्ट होंगे; उनके मन और तन में सदा प्रसन्नता की लहर दिखाई देगी। चाहे कोई भी परिस्थिति आ जाए, चाहे कोई आत्मा हिसाब-किताब चुक्तू करने वाली सामना करने भी आती रहे, चाहे

शरीर का कर्म-भोग सामना करने आता रहे लेकिन हद की कामना से मुक्त आत्मा सन्तुष्टता के कारण सदा प्रसन्नता की झलक में चमकता हुआ सितारा दिखाई देगी। प्रसन्नचित्त कभी कोई बात में प्रश्नचित्त नहीं होंगे। प्रश्न हैं तो प्रसन्न नहीं। प्रसन्नचित्त की निशानी - वह सदा निःस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा; किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा - न भाग्यविधाता के ऊपर कि मेरा भाग्य ऐसा बनाया, न ड्रामा पर कि मेरा ड्रामा में ही पार्ट ऐसा है, न व्यक्ति पर कि इसका स्वभाव-संस्कार ऐसा है, न प्रकृति के ऊपर कि प्रकृति का वायुमण्डल ऐसा है, न शरीर के हिसाब-किताब पर कि मेरा शरीर ही ऐसा है। प्रसन्नचित अर्थात् सदा निःस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले। तो संगमयुग की विशेषता 'सन्तुष्टता' है और सन्तुष्टता की निशानी 'प्रसन्नता' है। यह है ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति। सन्तुष्टता नहीं, प्रसन्नता नहीं तो ब्राह्मण बनने का लाभ नहीं लिया। ब्राह्मण जीवन का सुख है ही सन्तुष्टता, प्रसन्नता। ब्राह्मण जीवन बनी और उसका सुख नहीं लिया तो नामधारी ब्राह्मण हुए वा प्राप्तिस्वरूप प्रमाण हुए? तो बापदादा सभी ब्राह्मण बच्चों को यही स्मृति दिला रहे हैं - ब्राह्मण बने, अहो भाग्य! लेकिन ब्राह्मण जीवन का वर्सा, प्रापर्टी 'सन्तुष्टता' है। और ब्राह्मण जीवन की पर्सनल्टी 'प्रसन्नता' है। इस अनुभव से कभी वंचित नहीं रहना। अधिकारी हो। जब दाता, वरदाता खुली दिल से प्राप्तियों का खजाना दे रहे हैं, दे दिया है तो खूब अपनी प्रापर्टी और पर्सनल्टी को अनुभव में लाओ, औरों को भी अनुभवी बनाओ। समझा?

(05.10.1987)

प्रश्न:- लौकिक सम्बन्ध में बुद्धि यथार्थ फैसला देती रहे - उसकी विधि क्या है?

उत्तर:- कभी भी लौकिक बातों को सोचकर फैसला नहीं करना है। अलौकिक शक्तिशाली स्थिति में रहकर फैसला करो। कोई भी पिछली बातें स्मृति में रखने से बुद्धि उस तरफ चली जाती है, फिर पिछले संस्कार भी प्रगट होते हैं, इसलिए मुश्किल होता है। बिल्कुल ही लौकिक वृत्ति भूल आत्मा समझ फिर फैसला करो

तो यथार्थ फैसला होगा। इसे ही कहते हैं - विकर्माजीत का तख्त। अलौकिक आत्मिक स्थिति ही विकर्माजीत स्थिति का तख्त है, इस तख्त पर बैठकर फैसला करो तो यथार्थ होगा।

(26.01.1988)

प्रश्नः- सहजयोगी सदा रहें, उसकी सहज विधि कौन सी है?

उत्तरः- बाप ही संसार है - इस स्मृति में रहो तो सहजयोगी बन जायेंगे। क्योंकि सारा दिन संसार में ही बुद्धि जाती है। जब बाप ही संसार है तो बुद्धि कहाँ जायेगी? संसार में ही जाएगी ना, जंगल में तो नहीं जाएगी। तो जब बाप ही संसार हो गया तो सहजयोगी बन जायेंगे। नहीं तो मेहनत करनी पडेगी - यहाँ से बुद्धि हटाओ, वहाँ से जुड़ाओ। सदा बाप के स्नेह में समाए रहो तो वह भूल नहीं सकता।

(03.02.1988)

प्रश्नः- क्वालिटी वालों की निशानी क्या होती है?

उत्तरः-क्वालिटी वाली आत्मा की निशानी है - वह आते ही अपनापन महसूस करेगी। उसको ये स्मृति स्पष्ट होगी कि मैं इसी परिवार का था और पहुँच गया हूँ। अपनेपन से निश्चय में या पुरुषार्थ में देरी नहीं लगेगी। वह अपने परिवार को परख लेगा, अपने बाप को पहचान लेगा। तो अपनेपन का अनुभव होना ये पुरुषार्थ में क्वालिटी की निशानी है। सिर्फ नाम या धन में क्वालिटी नहीं, उसको सिर्फ क्वालिटी नहीं कहा जाता है, लेकिन पुरुषार्थ की भी क्वालिटी उसमें हो और जिसका अटल निश्चय पक्का रहता है, उसका प्रभाव स्वत: ही औरों पर पड़ता है। अपनापन होने के कारण उसको सब सहज अनुभव होगा। इसलिए तीव्र अर्थात् फास्ट जायेगा। जहाँ अपनापन होता है वहाँ कोई भी काम मुश्किल नहीं लगता है। तो ऐसी क्वालिटी वाली आत्मायें और ज्यादा से ज्यादा निकालो। समझा। आप सब तो क्वालिटी वाली आत्माएं हो ना। वृद्धि को प्राप्त कर रहे हो और आगे भी

करते रहेंगे। पहले स्व के पुरुषार्थ में वृद्धि, फिर सेवा में। तो दोनों बातों में सदा ही वृद्धि को प्राप्त करते, उड़ते चलो।

(04.12.1991)

प्रश्नः- सदा बाप की ब्लैसिंग स्वतः ही प्राप्त होती रहे - उसकी विधि क्या है?

उत्तरः- ब्लैसिंग प्राप्त करने के लिए हर समय, हर कर्म में बैलेन्स रखो। जिस समय कर्म और योग दोनों का बैलन्स होता है तो क्या अनुभव होता है? ब्लैसिंग मिलती है ना। ऐसे ही याद और सेवा दोनों का बैलेन्स है तो सेवा में सफलता की ब्लैसिंग मिलती है। अगर याद साधारण है और सेवा बहुत करते हैं तो ब्लैसिंग कम होने से सफलता कम मिलती है। तो हर समय अपने कर्म-योग का बैलेन्स चेक करो। दुनिया वाले तो यह समझते हैं कि कर्म ही सब कुछ है लेकिन बापदादा कहते हैं कि कर्म अलग नहीं, कर्म और योग दोनों साथ-साथ हैं। ऐसे कर्मयोगी कैसा भी कर्म होगा उसमें सहज सफलता प्राप्त करेंगे। चाहे स्थूल कर्म करते हो, चाहे अलौकिक करते हो। क्योंकि योग का अर्थ ही है मन-बुद्धि की एकाग्रता। तो जहाँ एकाग्रता होगी वहाँ कार्य की सफलता बंधी हुई है। अगर मन और बुद्धि एकाग्र नहीं हैं अर्थात् कर्म में योग नहीं है तो कर्म करने में मेहनत भी ज्यादा, समय भी ज्यादा और सफलता बहुत कम। कर्मयोगी आत्मा को सर्व प्रकार की मदद स्वतः ही बाप द्वारा मिलती है। ऐसे कभी नहीं सोचो कि इस काम में बहुत बिज़ी थे इसलिए योग भूल गया। ऐसे टाइम पर ही योग आवश्यक है। अगर कोई बीमार कहे कि बीमारी बहुत बड़ी है इसीलिए दवाई नहीं ले सकता तो क्या कहेंगे? बीमारी के समय दवाई चाहिए ना। तो जब कर्म में ऐसे बिजी हो, मुश्किल काम हो उस समय योग, मुश्किल कर्म को सहज करेगा। तो ऐसे नहीं सोचना कि यह काम पूरा करेंगे फिर योग लगायेंगे। कर्म के साथ-साथ योग को सदा साथ रखो। दिन-प्रतिदिन समस्यायें, सरकमस्टांश और टाइट होने हैं, ऐसे समय पर कर्म और योग का बैलेन्स नहीं होगा तो बुद्धि जजमेन्ट ठीक नहीं कर सकती। इसलिए योग और

कर्म के बैलेन्स द्वारा अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। समझा। फिर ऐसे नहीं कहना कि यह तो मालूम ही नहीं था - ऐसे भी होता है। यह पहले पता होता तो मैं योग ज्यादा कर लेता। लेकिन अभी से यह अभ्यास करो। जिस आत्मा को बापदादा की बैलेन्स के कारण ब्लैसिंग प्राप्त होती है उसकी निशानी क्या होगी? जो सदा ही बाप की ब्लैसिंग का अनुभव करते रहते हैं उसके संकल्प में भी कभी - यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी। क्या होगा - यह क्वेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है उसमें कल्याण छिपा हुआ है। क्योंकि कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण का है, कल्याण ही समाया हुआ है। बाहर से कितना भी कोई कर्म हलचल का दिखाई दे लेकिन उस हलचल में भी कोई गुप्त कल्याण समाया हुआ होता है और बाप के श्रीमत तरफ, बाप के सम्बन्ध तरफ अटेन्शन खिंचवाने का कल्याण होता है। ब्राह्मण लाइफ में क्या नहीं हो सकता? अकल्याण नहीं हो सकता। इतना निश्चय है या थोड़ा बहुत आयेगा तो हिल जायेंगे? समस्यायें आयें तो मिक्की माउस का खेल तो नहीं करेंगे? मिक्की माउस का खेल देखो भले लेकिन करना नहीं।

(31.12.1991)

प्रश्न:- नम्बरवन जाने वाली आत्माओं की विशेषता क्या होगी?

उत्तर:- जो बाप की विशेष श्रीमत है कि व्यर्थ को देखते हुए भी नहीं देखो, व्यर्थ बातें सुनते हुए भी नहीं सुनो - इस विधि वाला फास्ट और फर्स्ट सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। तो ऐसे प्रैक्टिकल धारणा अनुभव होती है या थोड़ा-थोड़ा कभी सुन लेते हो? कभी देख लेते हो? तीव्र पुरुषार्थी के सामने सदा मंजिल होती है। वो यहाँ-वहाँ कभी नहीं देखेगा। सदा मंजिल की ओर देखेगा। फॉलो किसको करना है? ब्रह्मा बाप को। क्योंकि ब्रह्मा बाप साकार कर्मयोगी का सिम्बल है। कोई कितना भी बिजी हो लेकिन ब्रह्मा बाप से ज्यादा बिज़ी और कोई हो ही नहीं सकता। कितनी

भी जिम्मेवारी हो लेकिन ब्रह्मा बाप जितनी जिम्मेवारी कोई के ऊपर नहीं है। इसलिए कोई भी कितना भी बिज़ी हो, कितनी भी जिम्मेवारी हो, लेकिन ब्रह्मा बाप जितना नहीं। तो ब्रह्मा बाप कर्मयोगी कैसे बने? ब्रह्मा बाप ने अपने को करनहार समझकर कर्म किया, करावनहार नहीं समझा। करावनहार बाप को समझने से जिम्मेवारी बाप की हो जाती है और स्वयं सदा कितने भी कार्य करे, कैसा भी कार्य करे - हल्के रहेंगे। तो आप सबने अपनी बुद्धि की तार बापदादा को दे दी है या कभी-कभी अपने हाथ में ले लेते हो? चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है और आप निमित्त कर्म क्या करते हो? डांस कर रहे हो। कितना भी बड़ा कार्य हो लेकिन ऐसे समझो जैसे नचाने वाला नचा रहा है और हम नाच रहे हैं तो थकेंगे नहीं। कन्फ्यूज़ नहीं होंगे। एवरहैप्पी रहेंगे। इसलिए बापदादा सदा कहते हैं कि सदा नाचो और गाओ। क्योंकि ब्राह्मण जीवन में कोई बोझ नहीं है। ब्राह्मण जीवन अति श्रेष्ठ है। लौकिक जॉब भी करते हो तो डायेरक्शन प्रमाण करते हो, बोझ नहीं है। क्योंकि बाप डायरेक्शन के साथ-साथ एक्स्ट्रा मदद भी देते हैं।

(31.12.1991)

प्रश्न:- असत्य और सत्य में विशेष अन्तर क्या है?

उत्तर:- असत्य की जीत अल्पकाल की होती है क्योंकि असत्य का राज्य ही अल्पकाल का है। सत्यता की हार अल्पकाल की और जीत सदाकाल की है। असत्य के अल्पकाल के विजयी उस समय खुश होते हैं। जितना थोड़ा समय खुशी मनाते वा अपने को राइट सिद्ध करते, तो समय आने पर असत्य के अल्पकाल का समय समाप्त होने पर जितनी असत्यता के वश मौज मनाई, उतना ही सौ गुणा सत्यता की विजय प्रत्यक्ष होने पर पश्चाताप करना ही पड़ता है। क्योंकि बाप से किनारा, स्थूल में किनारा नहीं होता, स्थूल में तो स्वयं को ज्ञानी समझते हैं लेकिन मन और बुद्धि से किनारा होता। और बाप से किनारा होना अर्थात् सदाकाल की सर्व प्राप्तियों के अधिकार से सम्पन्न के बजाए अधूरा अधिकार प्राप्त होना।

कई बच्चे समझते हैं कि 'असत्य के बल से असत्य के राज्य में विजय की खुशी वा मौज इस समय तो मना लें, भविष्य किसने देखा। कौन देखेगा-हम भी भूल जायेंगे, सब भूल जायेंगे।' लेकिन यह असत्य की जजमेंट है। भविष्य वर्तमान की परछाई है। बिना वर्तमान के भविष्य नहीं बनता। असत्य के वशीभूत आत्मा वर्तमान समय भी अल्पकाल के सुख के-नाम, मान, शान के सुखों के झूले में झूल सकती है और झूलती भी है, लेकिन अतीन्द्रिय अविनाशी सुख के झूले में नहीं झूल सकती। अल्पकाल के शान, मान और नाम की मौज मना सकते हैं लेकिन सर्व आत्माओं के दिल के स्नेह का, दिल की दुआओं का मान नहीं प्राप्त कर सकते। दिखावा-मात्र मान पा सकते हैं लेकिन दिल से मान नहीं पा सकते। अल्पकाल का शान मिलता है लेकिन बाप से सदा दिलतख्त-नशीन का शान अनुभव नहीं कर सकते। असत्य के साथियों द्वारा नाम प्राप्त कर सकते हैं लेकिन बापदादा के दिल पर नाम नहीं प्राप्त कर सकते। क्योंकि बापदादा से किनारा है। भविष्य की बात तो छोड़ो, वह तो अन्डरस्टुड है। लेकिन वर्तमान सत्यता और असत्यता की प्राप्ति में कितना अन्तर है? एक दूसरा मेरा बनाया अर्थात् असत्य का सहारा लिया। कितना झमेला हुआ! कहने में तो कहेंगे-और कुछ नहीं, सिर्फ कभी-कभी थोड़ा सहारा चाहिए। लेकिन वायदा तोड़ना अर्थात् झमेले में पड़ना। क्या ऐसा वायदा किया है-एक मेरा बाबा और कभी-कभी दूसरा? दूसरा भी एलाउ है? यह लिखा था क्या? चाहे अल्पकाल के नाम-मान-शान का सहारा लो, चाहे व्यक्ति का लो, चाहे वैभव का लो, जब दूसरा न कोई तो फिर दूसरा कहाँ से आया? यह असत्य के राज्य के झमेले में फंसाने की चतुराइयां हैं। जैसे बाप कहते हैं ना-मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा मुझे नम्बरवार जानते हैं। ऐसे असत्य के राज्य-अधिकारी 'रावण' को भी जो है, जैसा है, वैसे सदा नहीं जानते हो। कभी भूल जाते हो, कभी जानते हो। राज्य-अधिकारी है तो यह ताकत कम होगी! चाहे झूठा हो, चाहे सच्चा हो लेकिन राज्य तो है ना। इसलिए अपने को चेक करो, दूसरे को नहीं। आजकल दूसरों को चेक करने में सब होशियार हो गये हैं। बापदादा कहते हैं-अपना चेकर बनो और दूसरे

का मेकर बनो। लेकिन करते क्या हो? दूसरे का चेकर बन जाते हो और बातें बनाने में मेकर बन जाते हो। बापदादा रोज़ की हर एक बच्चे की कौनसी कहानियाँ सुनते हैं? बहुत बड़ा किताब है कहानियों का। तो अपने को चेक करो। दूसरे को चेक करने लगते हो तो लम्बी कथायें बन जाती हैं और अपने को चेक करेंगे तो सब कथायें समाप्त हो एक सत्य जीवन की कथा प्रैक्टिकल में चलेगी।

(24.09.1992)

प्रश्न:- सबसे सहज सदा शक्तिशाली रहने की विधि क्या है जिस विधि से सहज और सदा निर्विघ्न भी रह सकते हैं और उड़ती कला का भी अनुभव कर सकते हैं?

उत्तर:- सबसे सहज विधि है-और कुछ भी भूल जाये लेकिन एक बात कभी नहीं भूले-'मेरा बाबा'। 'मेरा बाबा' दिल से मानना-यही सबसे सहज विधि है आगे बढ़ने की। मेरा-मेरा मानने का संस्कार तो बहुत समय का है ही। उसी संस्कार को सिर्फ परिवर्तन करना है। 'अनेक' मेरे को 'एक' मेरा बाबा उसमें समाना है। एक को याद करना सहज है ना और एक मेरे में सब-कुछ आ जाता है। तो सबसे सहज विधि है-'मेरा बाबा'। 'मेरा' शब्द ऐसा है जो न चाहते भी याद आती है। 'मेरे' को याद नहीं करना पड़ता लेकिन स्वत: याद आती है। भूलने की कोशिश करते भी 'मेरा' नहीं भूलता। योग अगर कमजोर होता है तो भी कारण 'मेरा' है और योग शक्तिशाली होता है तो उसका भी कारण 'मेरा' ही है। 'मेरा बाबा'-तो योग शक्तिशाली हो जाता है और मेरा सम्बन्ध, मेरा पदार्थ-यह 'अनेक मेरा' याद आना अर्थात् योग कमजोर होना। तो क्यों नहीं सहज विधि से पुरुषार्थ में वृद्धि करो।

(03.10.1992)

प्रश्नः- ब्राह्मण जीवन का विशेष आक्यूपेशन क्या है?

उत्तरः- अपनी वृत्ति से, वाणी से और कर्म से विश्व-परिवर्तन करना। तो सभी ऐसी सेवा करते हो? या टाइम नहीं मिलता है? वाणी के लिए समय नहीं है तो वृत्ति से, मन्सा-सेवा से परिवर्तन करने का समय तो है ना। सेवाधारी आत्माएं सेवा के बिना रह नहीं सकती। ब्राह्मण जन्म है ही सेवा के लिए। और जितना सेवा में बिजी रहेंगे उतना ही सहज मायाजीत बनेंगे। तो सेवा का फल भी मिल जाये और मायाजीत भी सहज बन जायें-डबल फायदा है ना। जरा भी बुद्धि को फुर्सत मिले तो सेवा में जुट जाओ। वैसे भी पंजाब-हरि-याणा में सेवा-भाव ज्यादा है। गुरुद्वारों में जाकर सेवा करते हैं ना। वह है स्थूल सेवा और यह है रूहानी सेवा। सेवा के सिवाए समय गँवाना नहीं है। निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी बनो-चाहे संकल्प से करो, चाहे वाणी से, चाहे कर्म से। अपने सम्पर्क से भी सेवा कर सकते हो। चलो, मन्सा-सेवा करना नहीं आवे लेकिन अपने सम्पर्क से, अपनी चलन से भी सेवा कर सकते हो। यह तो सहज है ना। तो चेक करो कि सदा सेवाधारी हैं वा कभी-कभी के सेवाधारी हैं? अगर कभी-कभी के सेवाधारी होंगे तो राज्य-भाग्य भी कभी-कभी मिलेगा। इस समय की सेवा भविष्य प्राप्ति का आधार है। कभी भी कोई यह बहाना नहीं दे सकते कि चाहते थे लेकिन समय नहीं है। कोई कहते हैं-शरीर नहीं चलता है, टांगें नहीं चलती हैं, क्या करें? कोई कहती हैं-कमर नहीं चलती, कोई कहती हैं-टांगे नहीं चलती। लेकिन बुद्धि तो चलती है ना! तो बुद्धि द्वारा सेवा करो। आराम से पलंग पर बैठकर सेवा करो। अगर कमर टेढ़ी है तो लेट जाओ लेकिन सेवा में बिजी रहो।

(03.11.1992)

प्रश्नः- ब्राह्मण जीवन की सेफ्टी का साधन क्या है?

उत्तरः- अपने को हर समय हर कर्म करते बाप की छत्रछाया के अन्दर रहने वाले अनुभव करते हो? छत्रछाया सेफ्टी का साधन हो जाये। जैसे स्थूल दुनिया में धूप से

वा बारिश से बचने के लिए छत्रछाया का आधार लेते हैं। तो वह तो है स्थूल छत्रछाया। यह है बाप की छत्रछाया जो आत्मा को हर समय सेफ रखती है-आत्मा कोई भी अल्पकाल की आकर्षण में आकर्षित नहीं होती, सेफ रहती है। तो ऐसे अपने को सदा छत्रछाया में रहने वाली सेफ आत्मा समझते हो? सेफ हो या थोड़ा-थोड़ा सेक आ जाता है? जरा भी इस साकारी दुनिया का माया के प्रभाव का सेक-मात्र भी नहीं आये। क्योंकि बाप ने ऐसा साधन दिया है जो सेक से बच सकते हो। वह सबसे सहज साधन है-छत्रछाया। सेकेण्ड भी नहीं लगता, 'बाबा' कहा और सेफ! मुख से नहीं, मुख से 'बाबा-बाबा' कहे और प्रभाव में खिंचता जाये-ऐसा कहना नहीं। मन से 'बाबा' कहा और सेफ। तो ऐसे सेफ हो? क्योंकि आजकल की दुनिया में सभी सेफ्टी का रास्ता ढूँढते हैं। कोई भी बात करेंगे तो पहले सेफ्टी सोचेंगे, फिर करेंगे। तो आजकल सेफ्टी सब चाहते हैं-चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म। तो बाप ने भी सदा ब्राह्मण जीवन की सेफ्टी का साधन दे दिया है। चाहे कैसी भी परिस्थिति आ जाये लेकिन आप सदा सेफ रह सकते हो। ऐसे सेफ हो या कभी हलचल में आ जाते हो? कितना सहज साधन दिया है! मेहनत नहीं करनी पड़ी।

(03.11.1992)

प्रश्नः- सदा सहज पुरुषार्थ की विधि क्या है?

उत्तरः- सहज पुरुषार्थ का अनुभव है? क्या विधि अपनाई जो सहज हो गया? 'एक' को याद करना-यह है सहज विधि। क्योंकि 'अनेकों' को याद करना मुश्किल होता है। लेकिन एक को याद करना तो सहज है। सहजयोग का अर्थ ही है -'एक' को याद करना। एक बाप, दूसरा न कोई। ऐसा है? या बाप के साथ और भी कोई है? कभी-कभी देह-अभिमान में आ जाते हो। जब 'मेरा शरीर' है तो याद आता है, लेकिन मेरा है ही नहीं तो याद नहीं आता। तो तन-मन-धन तेरा है या मेरा है? जब मेरा है ही नहीं तो याद क्या आता? देहभान में आना, बॉडी-कॉन्सेस में आना अर्थात् मेरा शरीर है। लेकिन सदैव यह याद रखो कि मेरा नहीं,

बाप का है, सेवा अर्थ बाप ने ट्रस्टी बनाया है। नहीं तो सेवा कैसे करेंगे? शरीर तो चाहिए ना। लेकिन मेरा नहीं, ट्रस्टी हैं। मेरापन है तो गृहस्थी और तेरापन है तो ट्रस्टी। ट्रस्टी अर्थात् डबल लाइट। गृहस्थी को मेरे-मेरे का कितना बोझ होता है - मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरे पोत्रे.....! लम्बी लिस्ट होती है। यह बोझ है।

ट्रस्टी बन गये तो बोझ खत्म। ऐसे बने हो? या बदलते रहते हो? जब है ही कोई नहीं, एक बाप दूसरा न कोई-तो क्या याद आयेगा? सहज विधि क्या हुई? 'एक' को याद करना, 'एक' में सब-कुछ अनुभव करना। इसलिए कहते हो ना कि बाप ही संसार है। संसार में सब-कुछ होता है ना। जब संसार बाप हो गया तो 'एक' की याद सहज हो गई ना। मेहनत का काम तो नहीं है ना। आधा कल्प मेहनत की। ढूंढ़ना, भटकना-यही किया ना। तो मेहनत करनी पड़ी ना। अभी बापदादा मेहनत से छुड़ाते हैं। अगर कभी किसी को भी मेहनत करनी पड़ती है, तो उसका कारण है अपनी कमजोरी। कमजोर को सहज काम भी मुश्किल लगता है और जो बहादुर होता है उसको मुश्किल काम भी सहज लगता है। कमजोरी मुश्किल बना देती है, है सहज। तो बाप क्या चाहते हैं? सदा सहजयोगी बनकर चलो।

(21.11.1992)

प्रश्न:- सदा विजयी बनने का सहज साधन क्या है?

उत्तर:- सदा विजयी बनने का सहज साधन है-एक बल एक भरोसा। एक में भरोसा और उसी एक भरोसे से एक बल मिलता है। निश्चय सदा ही निश्चिंत बनाता है। अगर कोई समझते हैं कि मुझे निश्चय है, तो उसकी निशानी है कि वो सदा निश्चिंत होगा और निश्चिंत स्थिति से जो भी कार्य करेगा उसमें जरूर सफल होगा। जब निश्चिंत होते हैं तो बुद्धि जजमेन्ट यथार्थ करती है। अगर कोई चिंता होगी, फिक्र होगा, हलचल होगी तो कभी जजमेन्ट ठीक नहीं होगी। तराजू देखा है ना। तराजू की यथार्थ तौल तब होती है जब तराजू में हलचल नहीं हो। अगर हलचल

होगी तो यथार्थ नहीं कहा जायेगा। ऐसे ही, बुद्धि में अगर हलचल है, फिक्र है, चिन्ता है तो हलचल जरूर होगी।

इसीलिए यथार्थ निर्णय का आधार है-निश्चयबुद्धि, निश्चिंत। सोचने की भी आवश्यकता नहीं। क्योंकि फालो फादर है ना। यह करूँ, वह करूँ -ये तब सोचे जब अपना कुछ करना हो। फालो करना है ना। तो फालो करने के लिए सोचने की आवश्यकता नहीं। कदम पर कदम रखना। कदम है श्रीमत। जो श्रीमत मिली है उसी प्रमाण चलना अर्थात् कदम पर कदम रखना। तो सोचने की आवश्यकता है क्या? नहीं है ना। निश्चिंत हैं तो सदा ही निर्णय यथार्थ देंगे। जब निर्णय यथार्थ होगा तो विजयी होंगे। निर्णय ठीक नहीं होता तो जरूर हलचल है। जब भी कोई हलचल हो तो सोचो कि ब्रह्मा बाप ने क्या किया? क्योंकि ब्रह्मा बाप कर्म का सैम्पल है। ब्रह्मा बाप ने हर कदम श्रीमत पर उठाये। तो फालो फादर। सिर्फ फालो ही करना है, कोई नया रास्ता नहीं निकालना है, सोचना नहीं है। जब मनमत मिक्स करते हो तब मुश्किल होता है। एक-मुश्किल होगा; दूसरा-असफल। मेहनत तो की है ना। गांव में खेती का काम करते हैं तो मेहनत करते हैं। यहाँ तो मेहनत नहीं करनी है। सहज पसन्द है या मेहनत? मेहनत करके, अनुभव करके देख लिया।

अब बाप कहते हैं-मेहनत छोड़ मोहब्बत में रहो, लवलीन रहो। जो लव में लीन होता है उसको मेहनत नहीं करनी पड़ती है। ब्राह्मण माना मौज, ब्राह्मण माना मेहनत नहीं। बाप ने कहा और बच्चों ने किया-इसमें मेहनत की क्या बात है! बच्चों का काम है करना, सोचना नहीं। सहज योगी हो ना। सदा विजयी रत्न हो ना। यह रूहानी निश्चय चाहिए कि हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे! इतना अटल निश्चय हो। जब फालो फादर कर रहे हो तो कौन बनेंगे? वही बनेंगे ना। निश्चय तो निश्चय ही हुआ ना। अगर निश्चय में 10 परसेन्ट, 20 परसेन्ट कम हुआ तो निश्चय नहीं कहेंगे।

(20.12.1992)

प्रश्न:- बाप द्वारा जो सर्व खजाने मिले हैं उन सभी खजानों की चाबी क्या है? कौनसी चाबी लगाने से अनुभव होता है?

उत्तर:- 'मेरा बाबा'-यही चाबी है। 'मेरा' और फिर 'बाबा'। तो जब मेरा हो गया तो जो बाप का सो आपका हो गया और 'बाबा' कहा अर्थात् वर्से के अधिकारी बने। खजाने सभी आत्माओं को प्राप्त हैं लेकिन खजानों का अनुभव तब कर सकते हो जब दिल से ये स्मृति में रहे कि 'मेरा बाबा'। 'बाप' कहते ही वर्सा याद आ जाता है।

मालिक के साथ बालक भी हो और बालक के साथ मालिक भी हो। बालक बनने से सदा बेफिक्र, सदा डबल लाइट रहते हैं और मालिक अनुभव करने से मालिकपन का रूहानी नशा रहता है। तो बालकपन का अनुभव भी आवश्यक है और मालिकपन का अनुभव भी आवश्यक है। अभी-अभी मालिक, अभी-अभी बालक-यह दोनों ही विधि आती हैं? कई ऐसी बातें वा सम्बन्ध-सम्पर्क में आने से कई समय ऐसे आते हैं जिसमें कहाँ मालिक बनना पड़ता है और कहाँ बालक बनना पड़ता है। अगर बालक बनने के बजाए उस समय मालिक बन जायें तो भी हलचल में आ जाते हैं और जिस समय मालिक बनना चाहिए उस समय बालक बन जायें तो भी हलचल। जैसा समय वैसा स्वरूप। कोई भी कार्य करते हो तो मालिक बनकर करते हो लेकिन जब कोई बड़े यह फाइनल करते हैं कि यह काम ऐसे नहीं, ऐसे हो-तो उस समय फिर बालक बन जाते हो। राय के समय मालिक और जब मैजारिटी फाइनल करते हैं तो उस समय बालक; उस समय मालिकपन का नशा नहीं-मैंने जो सोचा वो राइट है। अभी-अभी मालिक, अभी-अभी बालक। तो जैसा समय वैसे स्वरूप में स्थित रहना-यह विधि आती है? इसको कहा जाता है आलराउन्ड पार्ट बजाने वाले। राय-बहादुर भी बने और 'हाँ जी' करने वाला भी। तो ऐसा करना आता है? क्योंकि इस ईश्वरीय मार्ग में कभी भी कोई ऐसे कह नहीं सकता कि मेरी बुद्धि का प्लैन बहुत अच्छा है, मेरी राय बहुत अच्छी है, मेरी राय क्यों नहीं मानी गई? 'मेरी' है? मेरी बुद्धि बहुत अच्छा काम करती है, मेरी

बुद्धि को रिगार्ड नहीं दिया गया-तो 'मेरा' है? जो भी विशेषता है वह 'मेरी' है या 'बाप' की देन है? तो बाप की देन में मेरापन नहीं आ सकता। इसलिए सदा ही न्यारे और प्यारे रहने वाले। तो यह भी एक सीढ़ी है बालक और मालिक बनने की। यह सीढ़ी है-कभी चढ़ो, कभी उतरो-कभी बालक बन जाओ, कभी मालिक बन जाओ। इससे सदा ही हल्के रहेंगे, किसी प्रकार का बोझ नहीं।

(31.12.1992)

प्रश्नः- सभी प्वाइंट्स का सार क्या है?

उत्तरः- प्वाइंट बनना। सब प्वाइंट्स का इसेन्स हुआ-प्वाइंट बनना। तो प्वाइट बनना सहज है या मुश्किल है? जो सहज बात होती है वो सदा होती है और मुश्किल होती है तो समटाइम (कभी-कभी) होती है। सबसे इजी (सहज) क्या है? प्वाइंट। प्वाइंट को लिखना सहज है ना! जब भी प्वाइंट रूप में स्थित नहीं होते तो क्वेश्चन-मार्क की क्यू होती है ना! क्वेश्चन-मार्क मुश्किल होता है! तो जब भी क्वेश्चन-मार्क आये तो उसके बदले इजी 'प्वाइंट' लगा दो। किसी भी बात को समाप्त करना होता है तो कहते हैं-इसको बिन्दी लगा दो। फुलस्टॉप लगाना आता है ना! फुलस्टॉप लगाने का सहज सलोगन याद रखो-जो हुआ, जो हो रहा है, जो होगा वह अच्छा होगा! क्योंकि क्वेश्चन तब उठता है जब अच्छा नहीं लगता है। इसलिए संगमयुग है ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकेण्ड अच्छे ते अच्छा। इससे सदा सहज-योगी जीवन का अनुभव करेंगे! 'अच्छा' कहने से अच्छा हो ही जाता है। स्वयं भी अच्छे और जो एक्ट करेंगे वह भी अच्छी! अच्छे को देखकर के दूसरे आकर्षित अवश्य होंगे। सभी अच्छा ही पसन्द करते हैं। अच्छा! सेवा अच्छी चल रही है ना! संख्या भी बढ़ाओ और क्वालिटी भी बढ़ाते चलो। ऐसे माइक तैयार करो जो एक के नाम से अनेकों का कल्याण हो जाए। स्वयं सदा सन्तुष्ट हो? अपने लिए तो कोई क्वेश्चन नहीं है ना! 'निश्चय' है फाउन्डेशन, निश्चय का फाउन्डेशन होगा तो कर्म आटोमेटिकली श्रेष्ठ होंगे। पहले स्मृति निश्चय की होती है। संकल्प में

निश्चय अर्थात् दृढ़ता होगी तो कर्म आटोमेटिकली फल देंगे। अच्छा! सभी खुश और सन्तुष्ट हैं! सदा खुशी में नाचने वाले हैं! हलचल का समय समाप्त हो गया। पास्ट को पास्ट किया और फयुचर तो है ही बहुत सुन्दर! गोल्डन फयुचर है!

(18.02.0993)

दादीजी के साथ प्रश्न उत्तर के रूप में चली हुई मधुर वार्तालाप

प्रश्नः- दादी जी चिंता मुक्त कैसे बनें? उसकी विधि क्या है?
उत्तरः- चिंता किस चीज़ का नाम है, चिंता क्यों करें? बाबा हमारे साथ है तो चिंता किस बात की? चिंता मुक्त रहो तो तन-मन ठीक रहेगा।

प्रश्नः- दादी जी सदा हर्षित कैसे रहें?
उत्तरः- बाबा मिला तो सब कुछ मिला, दुनिया की सारी चीज़ें मिल गई। सर्व प्राप्ति मिल गई। बाबा याद रहेगा तो सदा हर्षित रहेंगे।

प्रश्नः- दादी जी आपकी तबियत का हमें टेन्शन होता है?
उत्तरः- यह तो ख्याल रखो कि दादी जब खुद टेन्शन में नहीं है तो मैं क्यों टेन्शन करूं? क्या दादी में ममता है? बाबा से अति प्यार हो तो टेन्शन नहीं होगा।

डॉक्टरः- दादी जी मुझे सब आपके स्वास्थ्य के बारे में पूछते हैं, तो उन्हें क्या जवाब दूँ?
उत्तरः- सभी से कहो दादी का स्वास्थ्य ठीक है, थोड़ा 19-20 तो होता ही है।

प्रश्नः- बेफिकर कैसे रहें?
उत्तरः- बुद्धि में पक्का ज्ञान हो, जो होने का है, सो होगा। ड्रामा में जो होना है वो होगा फिर फिकर किस बात का।

प्रश्नः- दादी, आप दादी कैसे बनी?
उत्तरः- आप सबने बनाया। बाबा ने सब योग्यता देखी। पालना की, सम्भालने की, कारोबार की, फेथफुल की सब योग्यतायें बाबा ने भर दी इसलिए सब दादी कहने लगे।

प्रश्नः- क्रोध महाशत्रु पर जीत कैसे पायें?
उत्तरः- इसके लिए पहले बुद्धि में पक्का होना चाहिए कि हम शान्तमूर्त हैं, शान्त स्वरूप हैं। तो हमें सबको शान्ति का दान देना है, न कि गुस्सा करके अशान्ति फैलानी है। तो आज पक्का वायदा करो कि किसको दुःख नहीं देना है। दुःख देना ही नहीं तो क्रोध करना भी नहीं।

प्रश्नः- संसार में अनेक प्रकार के कलह कलेष लाड़ाई-झगड़ा है, तो हम क्या समझें, विनाश कब होगा?
उत्तरः- किसी भी घड़ी कुछ भी हो सकता है, इसलिए सदा एवररेडी रहो।

प्रश्नः- लगाव मुक्त कैसे बनें?
उत्तरः- एक बाबा से प्यार हो तो बाकी सबसे लगाव निकल जायेगा।

प्रश्नः- दादी जी, गुल्जार दादी की विशेषता क्या है?
उत्तरः- दादी का 3 गिफ्ट मिली हैः- 1. दादी, बाबा का रथ है। 2. दादी बहुत अच्छी स्पीकर है, बहुत रिफाइन भाषण करती है। रात हो, दिन हो कभी भी दादी

को बोलो, दादी क्लास कराती है। 3. दादी नष्टोमोहा है, किसी देहधारी से लगाव नहीं है इसलिए दादी को सभी बहुत प्यार करते हैं। दादी की इज्जत करते हैं।

प्रश्नः- दादी जी आपने कौन-कौन सा साक्षात्कार किया है?
उत्तरः- कृष्ण का, राधे का, चतुर्भुज का, साक्षात्कार पहले पहले किया। लेकिन साक्षात्कार हमारे वश में नहीं है, बाबा के वश में हैं। साक्षात्कार कराना ये बाबा की मर्जी है।

प्रश्नः- साक्षात्कार से फायदा क्या होता है?
उत्तरः- खुशी होती है, निश्चय बढ़ता है।

प्रश्नः- दादी आपको क्या अच्छा लगा, जो सारा जीवन यज्ञ में स्वाहा किया?
उत्तरः- बाबा ने मुझे अपना बनाया। बाबा खुद बहुत अच्छा लगा। बाबा की मुरली अच्छी लगी।

प्रश्नः- आपको बाबा से कौन-सा सम्बन्ध रखना अच्छा लगता है?
उत्तरः- बाबा से सर्व सम्बन्ध अच्छे लगते हैं। बाबा भी बहुरूपी, हम भी बहुरूपी। यज्ञ में जब आये तो बाबा टोटल अच्छा लगा।

प्रश्नः- मन्सा सेवा कैसे करें?
उत्तरः- मन्सा से सूक्ष्म शुभ भावनायें दो। साथ में प्यार से व्यवहार करो।

प्रश्नः- कोई गलत काम करके आपके पास आये तो आप उन्हें कैसे समझती थी?
उत्तरः- प्यार से समझाती थी लेकिन गुस्सा नहीं करती थी। समझाने के बाद भी न माने तो उसे छोड़ देती थी।

प्रश्नः- व्यवहार कुशल बनने के लिए क्या करें?
उत्तरः- 1. कुछ भी कार्य करना या कराना है तो प्यार से करो और कराओ, रिगार्ड रखो। 2. कोई हमारे से कैसा भी व्यवहार करें, हमें दिलशिकस्त नहीं होना है, न ही उदास होना है। 3. आप अपनी तरफ से प्यार का व्यवहार करो वो कुछ भी करे।

प्रश्नः- उदासी क्यों आती है?
उत्तरः- सर्विस नहीं है तो उदासी आती। कोई न कोई सेवा में अपने को बिजी करो तो उदासी खत्म हो जायेगी।

प्रश्नः- दादी जी सेवा कितने प्रकार की होती है?
उत्तरः- 1. पहली सेवा तो यही है कि बाबा सदा याद रहे। 2. मुख से किसको ज्ञान समझाना। 3. कर्मणा से सबको खुश करना।

प्रश्नः- हमारे से कोई खुश न हो तो क्या करें?
उत्तरः- ऐसी कोई बात नहीं है। तुम अपने तरफ से पूरा शुभ भावना का संकल्प रखो।

प्रश्नः- शारीरिक बीमारी पर विजय कैसे पायें?
उत्तरः- यह भी हिसाब चुक्तू हो रहा है तो खुशी होगी, दर्द के समय सहनशक्ति रखो।

प्रश्नः- हमारे जीवन का सिद्धान्त क्या होना चाहिए?
उत्तरः- सभी से मीठा, प्यार से व्यवहार करो इसमें सब आ जाता है। अगर कोई हम से दुःखी होता है, तो उसे खुद पूछना चाहिए कि मेरे से संतुष्ट क्यों नहीं होते।

हम ध्यान रखकर उसे संतुष्ट करें।

प्रश्नः- आदर्श ब्रह्माकुमारी किसे कहेंगे?

उत्तरः- 1. जिसको सिर्फ बाबा ही याद हो। 2. बाबा की मुरली से प्यार हो। 3. दादी से भी प्यार, ईश्वरीय परिवार से भी प्यार हो। 4. दुनिया वालों को उनसे यह वायब्रेशन मिलें कि यह पवित्र शुद्ध बहनें हैं। आदर्श माना रॉयल। ज्ञान में, योग में, बोल-चाल में, व्यवहार में सब में रॉयल्टी हो।

प्रश्नः- सहनशक्ति कसे कहेंगे?

उत्तरः- हमें बाबा ने नॉलेज दी है सहनशक्ति धारण करने की, क्योंकि आज के मनुष्य रांग राइट को न समझ जो मन में आया वो बोल देते हैं। तो सहनशक्ति न होने से क्यों क्या चलती रहती है। पर जब सहनशक्ति होती तो एक सेकण्ड में समेट देते। एक कान से सुना, दूसरे से निकाला। अगर सहन नहीं होता तो उसे देह-अभिमान कहा जायेगा। देह-अभिमान वाला कहेगा कि यह ऐसा क्यों कह रहा है इसलिए झगड़ा हो जाता है, इसलिए एक कान से सुनो दूसरे से निकाल दो। अगर सहनशक्ति नहीं है तो फज़ूल में प्रश्न-उत्तर चलेगा। टाइम वेस्ट होगा, झगड़ा बढ़ेगा। घर का वातावरण पवित्र, शुद्ध, शान्त नहीं रहेगा।

प्रश्नः- ब्राह्मणों को किन धारणाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए?

उत्तरः- ब्राह्मणों को पहला नम्बर ध्यान देना चाहिए पवित्रता पर। हमारी मर्यादा है कि फालतू टाइम हँसी-मजाक में नहीं गंवाना है। गम्भीर, शान्त रहना है। चेहरा सदैव खुशी का मुस्कुराने वाला हो। खुशी माना सदैव मुस्कुराते रहो। किसी के अवगुण नहीं देखना है। हर एक के साथ प्यार से रहना है, नफरत नहीं करना है। मुझे बदलना है इसलिए सहनशक्ति धारण करनी है।

प्रश्नः- ब्राह्मणों की अवस्था नीचे-ऊपर न हो उसके लिए क्या करें?

उत्तरः- अवस्था नीचे ऊपर होना माना बाबा का नाम बदनाम करना। स्थिति एकरस रहना माना बाबा की नॉलेज और उसके गुण गाना। बाबा कहते बुरे को बुरा नहीं देखो बल्कि उन्हें प्यार की रूहानी दृष्टि दो तो फरिश्ता बनते जायेंगे। फरिश्ते के चलन में भी उड़ना है।

प्रश्नः- ओम शान्ति के महामन्त्र से क्या फायदे है?

उत्तरः- पहले तो यह स्मृति आती है कि आप एक आत्मा। तो उसी स्मृति में रहने से खुशी रहती है। बाबा भी याद आता क्योंकि यह मन्त्र बाबा ही दिलाता है।

प्रश्नः- ब्राह्मणों के लिए बाबा की क्या-क्या श्रीमत है?

उत्तरः- रोज मुरली सुनो। पवित्र रहो। खान-पान पवित्र, शुद्ध खाओ। स्ट्रिक्ट वेजिटेरियन रहो। इन श्रीमत पर चलने से अच्छी स्थिति रहेगी, जैसे बाबा चाहता है वैसे शुद्ध, पवित्र रहेगी। मुरली सुनना माना अमृतवेले उठना यह तो अण्डरस्टुड हो गया।

प्रश्नः- मुरली सुनते समय हमारी स्थिति कैसे हो?

उत्तरः- बस बाबा ही सामने हो ऐसे लगे हम बाबा से सुन रहे हैं और बाबा की मुरली केवल मेरे लिए हैं।

प्रश्नः- मुरली सुनने का फायदा क्या है?

उत्तरः- शक्ति मिलती। फ्रेश हो जाते। मुरली ब्राह्मणों का श्वांस है।

प्रश्नः- सदा उड़ती कला में जाने के लिए क्या करें?

उत्तरः- अशरीरी बनने का अभ्यास करें।

प्रश्नः- अमृतवेले सुस्ती को भगाने के लिए क्या करें?

उत्तरः- बैठने से पहले इमर्ज करो बाबा। फिर उसी मस्ती में बैठो। योग में झुटका आना माना माया है, कमजोरी है। इससे ही तो युद्ध है इसे ही जीतना है।

प्रश्नः- माया पर विजय कैसे पायें?

उत्तरः- खुद ही पावरफुल संकल्प करो। पक्का करते चलो, उसका मंनि करते चलो तो खुद ही दूसरे संकल्प खत्म होंगे।

प्रश्नः- अमृतवेले नींद क्यों आती है?

उत्तरः- यही तो सुस्ती है। अटेन्शन रखें, आंखें बन्द करके बैठना यह है सुस्ती। अमृतवेले बाबा को बाबा के सम्बन्ध से याद करे। बाबा से खुशी मिलेगी।

प्रश्नः- अपनी स्थिति को एकरस रखने के लिए क्या करें?

उत्तरः- सदा एक बाबा की याद में रहे। तो स्थिति अच्छी पक्की रहेगी।

प्रश्नः- ब्राह्मण जीवन की मर्यादा क्या है?

उत्तरः- एक बाप की याद में रहना, दूसरे किसी की भी याद न आये, यह है मर्यादा। आपसी व्यवहार में एक दूसरे के साथ लव, रिस्पेक्ट रखना है।

प्रश्नः- मन भटकता है उसे कन्ट्रोल कैसे करें?

उत्तरः- रोज राजयोग का अभ्यास करो तो भटकना बन्द हो जायेगा।

प्रश्नः- यज्ञ में ओम ध्वनि कब बन्द हुई?

उत्तरः- आबू में आकर बन्द हुई, क्योंकि यह भक्तिमार्ग की रस्म है। बाद में ओम्... बाबा खुद कहता था तो सायलेन्स हो जाते थे। ओम् बन्द किया तो

शिवबाबा से योग लगाते थे।

प्रश्नः- दादी जी आप योग कैसे लगाते हो?
उत्तरः- बाबा सूक्ष्म है - वो तो ज्ञान है ना। तो उस प्रमाण करते। बाप को सम्बन्ध से याद करती हूँ।

प्रश्नः- कर्मातीत किसको कहेंगे?
उत्तरः- कोई कर्म बन्धन नहीं। कोई विघ्न नहीं।

प्रश्नः- विघ्न क्यों आते हैं?
उत्तरः- पिछला हिसाब-किताब है।

प्रश्नः- पिछला हिसाब-किताब कैसे चुक्तू करें?
उत्तरः- जितना बाबा को याद करेंगे उतना पिछला हिसाब चुक्तु होगा।

प्रश्नः- कैसे समझे हिसाब चुक्तु हुआ?
उत्तरः- बैठो और योग लग जावे और कोई याद न आवे।

प्रश्नः- दादी आपको बाबा इतना प्यार क्यों करता है?
उत्तरः- वो तो बाबा से पूछो। जितना बाबा प्यार करता उतना दादी भी करती। प्यार से प्यार खींचता है।

प्रश्नः- हर्षितमुख रहने के लिए क्या करें?
उत्तरः- सदा बाबा याद रहे। दूसरा कोई याद न आवे।

प्रश्नः- टेन्शन मुक्त कैसे रहे?

उत्तरः- हँसो, बहलो तो टेन्शन चला जायेगा।

प्रश्नः- खुशी गायब क्यों होती है?

उत्तरः- देह-अभिमान के कारण।

प्रश्नः- एकरस स्थिति के लिए क्या पुरुषार्थ करे?

उत्तरः- बाबा, बाबा, बाबा।

प्रश्नः- रोना अच्छा है या नहीं?

उत्तरः- नहीं।

प्रश्नः- मैग्जीन के लिए आपका सन्देश क्या है?

उत्तरः- सदा मुस्कुराते रहो, उसका आधार है बाबा।

प्रश्नः- पास विद ऑनर की निशानी क्या होगी?

उत्तरः- उनकी सभी दिल से, प्यार से इज्जत करेंगे। इज्जत में सब आ गया।

प्रश्नः- प्यार, इज्जत पाने के लिए क्या करे?

उत्तरः- धारणा पर पूरा पूरा ध्यान होगा।

प्रश्नः- देही-अभिमानी की प्रैक्टिस कैसे करे?

उत्तरः- बीच-बीच में थोड़ा सायलेन्स में रहो तो सोल कॉन्सेस होते जायेंगे।

प्रश्नः- एक मिनट में ही तो देह याद आती है, तो उसे कैसे भूले?
उत्तरः- सारा टाइम बाबा ही याद रहे।

प्रश्नः- बाबा के दिलतख्त पर बैठना है तो क्या करे?
उत्तरः- कोई भी मन्सा, वाचा, कर्मणा ऐसे गलत काम नहीं करे। भूल ना करे।

प्रश्नः- अगर भूल हो जाये तो?
उत्तरः- सॉरी करे। किसे? हेड से सॉरी करे।

प्रश्नः- दुनिया वाले बोलते देवता को भगवान क्यों नहीं कहते? भगवान व देवता में क्या अन्तर है?
उत्तरः- देवता को देवता ही कहेंगे। भगवान नहीं। भगवान अलग है। देवता देहधारी है, भगवान देहधारी नहीं है। भगवान सदा ही सम्पन्न है। देवता 19-20 होता है।

प्रश्नः- विनाश कब होगा?
उत्तरः- भगवान ने डेट नहीं दी तो हम भी नहीं बताते। विनाश अपने समय पर ही होगा।

प्रश्नः- अच्छे संस्कार किसे कहेंगे?
उत्तरः- अच्छे संस्कार वाला सदैव रूहानी दृष्टि, रूहानी सृष्टि में मस्त रहेगा। उनसे कभी पाप कर्म नहीं होगा। पुण्य कर्म ही होता रहेगा। पुण्य कर्म माना अच्छा कर्म। अच्छा कर्म करने से फल भी अच्छा मिलेगा। अच्छाई तो अच्छाई ही होती है। अच्छा कर्म माना गुड़ बिहेवियर। कभी भी आपस में लड़ना नहीं।

प्रश्नः- समाने की शक्ति कैसे धारण करे?
उत्तरः- बाबा को याद करो। बाबा के चरित्र को याद करो। तो बाबा के चरित्र सो हमारे चरित्र।

प्रश्नः- चरित्र किसे कहेंगे?
उत्तरः- जिससे दिव्य कर्म हो। सत्कर्म हो।

प्रश्नः- सत्कर्म किसे कहेंगे?
उत्तरः- दूसरों को दान करना। दूसरों की सेवा करना।

प्रश्नः- संगम पर सत्कर्म कलयुग में पाप कर्म ऐसा क्यों होता है?
उत्तरः- सारा समय का प्रभाव है।

प्रश्नः- अपनी कमजोरी को खत्म करने के लिए क्या करे?
उत्तरः- अटेन्शन रखने से धीरे-धीरे खत्म हो जायेगी। जरा टाइम लगेगा।

प्रश्नः- सतगुरुवार को भी भोग क्यों लगाते हैं?
उत्तरः- सारे सप्ताह तो भोग नहीं लगा सकते। क्योंकि यह गुरुवार सारे सप्ताह का विशेष दिन होता है। इसी दिन पूजा करते, मनाते हैं।

प्रश्नः- भोग बनाने समय मन की स्थिति कैसी हो?
उत्तरः- बाबा की याद हो और कुछ भी नहीं। तो उस भोग से सबका मन परिवर्तन हो जाता है।

प्रश्नः- सही गलत की परख कैसे हो?

उत्तरः- ज्ञान की समझ आ जाती है। सही गलत कर्म की राय लेना है तो टीचर से लेवे। जब उनसे भी नहीं मिलेगा तो खुद बाबा को याद करो जो राइट होवे सो करो।

प्रश्नः- दादी अभी आप क्या पुरुषार्थ कर रहे हो?

उत्तरः- पुरुषार्थ यही है कि सभी को शुभ-भावना का वायब्रेशन मिले।

प्रश्नः- आप से सभी को मिलने के बाद ऐसा लगता है कि सब मिल गया ऐसा क्यों?

उत्तरः- क्योंकि सबका प्यार है, मेरा भी प्यार है।

प्रश्नः- दादी आपको सब प्यार क्यों करते?

उत्तरः- क्योंकि दादी भी सबको प्यार करती।

प्रश्नः- दादी पहले कौन करता? हम या आप?

उत्तरः- पहले दादी प्यार करती फिर आप करते हो।

प्रश्नः- समर्पित के लक्षण क्या होंगे?

उत्तरः- अनासक्त होंगे। हर कदम श्रीमत पर चलेंगे। हर सम्बन्ध एक बाबा से होगा।

प्रश्नः- दिन भर में 8 घण्टा याद कैसे हो?

उत्तरः- विधि है यह शरीर बाबा की अमानत है। अमानत हमेशा प्यार से, विश्वास से रखी जाती है। हर कर्म में बाबा याद आये।

प्रश्नः- साक्षी स्थिति बनाने के लिए विशेष कौन-सी बात ध्यान में रखें?
उत्तरः- ड्रामा में हरेक का पार्ट अपना-अपना है। इसका उत्तर ही है ड्रामा।

प्रश्नः- मुरली सुनने के बाद भूल जाते हैं, तो उसे याद रखने की विधि क्या है?
उत्तरः- अटेन्शन रखे कि मुझे दो बार मुरली रिपीट करनी है। तो मुरली पक्की हो जायेगी।

प्रश्नः- लौकिक के साथ व्यवहार कैसे हो?
उत्तरः- जैसे सभी के साथ वैसे लौकिक के साथ। लौकिक से मोह नहीं रखना है।

प्रश्नः- गुस्सा आये तो क्या करे?
उत्तरः- बाबा की याद में रहेंगे तो गुस्सा आयेगा ही नहीं।

प्रश्नः- लेकिन जब गुस्सा आता है तभी तो बाबा भूलता है?
उत्तरः- क्योंकि उस बत का चिंतन पहले से चलता रहता है। तो उस समय बाबा भूल जाता है।

प्रश्नः- दादी जी आपका यादगार वैष्णव देवी है या शीतला देवी?
उत्तरः- वैष्णव देवी।

प्रश्नः- मायाजीत बनने के लिए क्या पुरुषार्थ करे?
उत्तरः- यह नॉलेज होवे कि ये माया है। हमें इसको देखना नहीं है।

प्रश्नः- कई बार गलती करना नहीं चाहते लेकिन हो जाती है इसका कारण?
उत्तरः- आसक्ति।

प्रश्न:- गलती को स्वीकार क्यों नहीं करते?
उत्तर:- अभिमान है।

प्रश्न:- राजयोग की विधि क्या है?
उत्तर:- जब आप दृष्टि देते, योग में बिठाओ तो आगे वाले को यह फीलिंग आवे कि मैं आत्मा शक्तिशाली बन रही हूँ। योग करना माना शक्ति भरना।

प्रश्न:- योग के फायदे क्या?
उत्तर:- 1. व्यर्थ संकल्प पर कन्ट्रोल। 2. व्यर्थ बातें करना, सुनना, सुनाना खत्म हो जाता। 3. योग से हमारे अन्दर शक्ति आती।

प्रश्न:- मम्मा की विशेषता क्या थी?
उत्तर:- 1. गम्भीर थी। 2. मायाजीत थी। 3. मम्मा की मुरली बड़ी मीठी थी। 4. मम्मा से सभी को शक्ति की भासना आती थी। 5. मम्मा का स्लोगन था - हुक्मी हुक्म चला रहा।

प्रश्न:- मिरुआ मौत और मुलक का शिकार का अर्थ क्या है?
उत्तर:- आप जब जाती हो शिकार करने तो खुशी होती कि मैं शिकार करके आयी।

प्रश्न:- ज्ञान में उसका क्या अर्थ है?
उत्तर:- निर्भयता।

प्रश्न:- हम क्या पुरुषार्थ करे?
उत्तर:- मायाजीत सदा रहो। किसी प्राकर की भी माया न आवे। माया माना

देहअभिमान है। देह-अभिमान को खत्म करने के लिए बाबा की याद का ज्यादा अटेन्शन रखना है। बाबा बुद्धि में घूमे तो सब बातें खत्म।

प्रश्नः- बाबा कहते अपने कर्मचारियों की दरबार लगाओ, उसका मतलब क्या है?

उत्तरः- दरबार माना कर्मेन्द्रिय रूपी कर्मचारियों को दरबार लगाके पूछो ठीक हो? अपने दरबार में सभी राजी खुशी हो? दिनभर कुछ गलती की हो तो उनसे पूछो। अगर कोई रांग होगा तो अटेन्शन देंगे।

प्रश्नः- गम्भीरता किसे कहते हैं?

उत्तरः- गम्भीरता माना ये नहीं कि सीरियस हो जाओ। गम्भीरता माना जो दूसरे को दो बात करे उनके बीच में न बोलना। उस समय शान्त रहना। गम्भीरता माना ही शान्त रहना। चेहरा हमारा हर्षितमुख हो।

प्रश्नः- श्वासों श्वास याद करना किसको कहते हैं?

उत्तरः- बाबा का मतलब है जो भी टाइम मिले, कोई भी काम शुरू करो तो बाबा की याद से करो। बाबा भूलना यह भी विकर्म है।

प्रश्नः- यज्ञ में हड्डी हड्डी स्वाहा करने का भाव क्या है?

उत्तरः- यज्ञ की जिगरी सेवा करो। बाबा तो कहता यज्ञ की सर्व प्रकार से सेवा करो।

प्रश्नः- संगठन को मजबूत बनाने की विधि क्या है?

उत्तरः- छोटा हो या बड़ा पर उनको प्यार और रिस्पेक्ट चाहिए। अगर यह देंगे तो संगठन मजबूत होगा और वो आपका हो जायेगा।

प्रश्नः- प्रसन्न रहने की विधि क्या है?
उत्तरः- साक्षी हो खेल देखो। ये ड्रामा का खेल है, तो खेल को देख प्रसन्न हो जाओ। जिसे यह नशा है कि बाबा मिल गया।

प्रश्नः- प्रशंसा के पात्र कैसे बने?
उत्तरः- ऐसे कर्म करो जो गायन योग्य हो। सेवा करने से गायन होगा।

प्रश्नः- सेवा में विशेष कौन-सी धारणा हो?
उत्तरः- सदा बाबा याद रहे। इनसे बड़ी धारणा और क्या हो सकती है।

प्रश्नः- अपनी बीमारी के बारे में क्या सोचें?
उत्तरः- हिसाब-किताब चुक्तु हो रहा है।

प्रश्नः- ऑनेस्ट किसे कहेंगे?
उत्तरः- ऑनेस्ट माना सच्चा। अगर मन में शंका हो तो कनफर्म करना चाहिए।

प्रश्नः- यज्ञ से वफादारी का अर्थ क्या है?
उत्तरः- जो सकण्ड बाय सेकण्ड आज्ञा मिले उसे पालन करना।

प्रश्नः- बाबा से वफादारी का अर्थ क्या है?
उत्तरः- जो बाबा कहे वो करो, जरा भी अपनी मनमानी मिक्स न करो।

प्रश्नः- आप समझते हैं कि यह आत्मा ऑनेस्ट नहीं है तो उनसे आप कैसे चलेंगे?
उत्तरः- उनके साथ युक्ति से चलेंगे। मुख से बोलेंगे नहीं। व्यवहार से वह आत्मा सुधर जायेगी।

प्रश्नः- आजकल किसी को डायरेक्ट शिक्षा नहीं दे सकते तो उस आत्मा का कल्याण कैसे होगा?

उत्तरः- जैसे व्यक्ति वैसा व्यवहार। अगर सहन कने जैसा है, सुनने जैसा है तो डायरेक्ट बोले। नहीं तो युक्ति से चले।

प्रश्नः- कारोबार के कारण मुरली क्लास में नहीं जा सकते हैं ये राइट है या रांग?

उत्तरः- रांग है।

प्रश्नः- कभी-कभी ऐसा लगता है कि भाषण छोड़ो, कारोबार में लगे तो क्या करे?

उत्तरः- बैलेन्स रखें।

प्रश्नः- दादी आपको सपने में क्या दिखता है?

उत्तरः- बाबा का प्यार दिखता है।

प्रश्नः- बाबा के प्यार का पात्र बनने के लिए क्या करे?

उत्तरः- सबके प्यार के पात्र बन जाओ तो बाबा का प्यार ऑटोमेटिक मिल जायेगा। सबके प्यार का पात्र बनने के लिए सबसे इतना मीठा बोलो जो वो आकर्षित हो जाये।

प्रश्नः- आज्ञाकारी किसे कहेंगे?

उत्तरः- बाबा की यह आज्ञा है कि एक मेरे सिवाय किसी को याद नहीं करो। आज्ञाकारी माना आज्ञा पालन करना। ईश्वरीय परिवार से प्यार हो लेकिन बुद्धि में एक बाप हो।

प्रश्नः- आपने ब्रह्मा बाप को कैसे फॉलो किया?

उत्तरः- शुरू से बाबा के संग रहे और बाबा की प्यार की दृष्टि भी सदा ही रही। तो फॉलो करती गई। मैं बांधेली नहीं थी सो सहज फॉलो किया।

प्रश्नः- हमने तो ब्रह्मा बाबा को देखा नहीं फिर उसे फॉलो कैसे करे?

उत्तरः- बाबा की मुरली, महावाक्यों के आधार पर फॉलो करना है।

प्रश्नः- दुनिया वाले पूछते हैं कि हम भगवान को कैस माने? उन्हें कैसे बताये?

उत्तरः- यह पढ़ाई पढ़े। जो बाबा की मुरली चलाते उससे खबर पड़ेगी कि यह बाबा कौन है।

प्रश्नः- हम लास्ट में आये हैं तो आगे कैसे जाए?

उत्तरः- मुरली द्वारा होगा। जितना मुरली से प्यार होगा उतना पुरानों से आगे जायेंगे।

प्रश्नः- हमें दुआयें देना और लेना है तो पहले देवे या लेवे?

उत्तरः- पहले दुआयें लेना है।

प्रश्नः- दुआयें लेने के लिए क्या करे?

उत्तरः- उसके लिए बाबा को याद कर हर कार्य करे?

प्रश्नः- कैसे समझे कि दुआयें मिल रही है?

उत्तरः- हर कार्य में सफलता मिलेगी। खुशी मिलेगी।

प्रश्नः- आज्ञाकारी बनने के लिए कौन-सा गुण चाहिए?
उत्तरः- हाँ जी, का गुण धारण करे।

प्रश्नः- खुश रहने के लिए क्या करे?
उत्तरः- निरन्तर बाबा की याद में रहे।

प्रश्नः- भट्ठी का लक्ष्य क्या है?
उत्तरः- निरन्तर याद में रहना। रोना, गुस्सा नहीं करना। बाबा को याद करना और शान्त रहना।

प्रश्नः- सपूत बच्चों की निशानी क्या है?
उत्तरः- मीठा और प्यार से बोलेंगे।

प्रश्नः- समर्पित की धारणा क्या होगी?
उत्तरः- शान्त रहना और मुस्कुराना।

प्रश्नः-कमजोरी को समाप्त करने के लिए क्या पुरुषार्थ करे?
उत्तरः- अपना लक्ष्य बार-बार याद करे। लक्ष्य है देवता बनना।

प्रश्नः- टीचर की मुख्य धारणा क्या होनी चाहिए?
उत्तरः- धीरे बोले, मीठा बोले।

प्रश्नः- छोटे का बड़ों से व्यवहार क्या होना चहिए?
उत्तरः- रिस्पेक्ट चाहिए। आज्ञाकारी बनना है। एक बाप की याद में रहना है।

प्रश्नः- भट्ठी का लक्ष्य क्या होना चाहिए?
उत्तरः- परिवर्तन। जिसमें जो कमी है उसका परिवर्तन। मान लो गुस्सा है, आदत है परन्तु भट्ठी में ऐसा पक्का करो जो ये आदत खत्म हो जावे।

प्रश्नः- कमजोरी का पता क्यों नहीं लगता?
उत्तरः- ज्ञान की कमी के कारण।

प्रश्नः- क्या अटेन्शन रखे?
उत्तरः- कोई देह-अभिमान न हो।

प्रश्नः- देह-अभिमानी की निशानी क्या है?
उत्तरः- वह समझेगा मेरे जैसा कोई नहीं है।

प्रश्नः- नम्बर वन में आने के लिए क्या करे?
उत्तरः- सब गुण हो। विशेष सभी से प्यार हो। न गुस्सा करना है, न नाराजगी रखना है। सबसे प्यार हो तो नम्बर वन आयेंगे।

प्रश्नः- फरिश्ता बनने के लिए क्या करे?
उत्तरः- योगी रहने का पुरुषार्थ करे।

प्रश्नः- सदा बाबा का बना रहने के लिए क्या ध्यान रखे?
उत्तरः- रियलाईजेशन चाहिए। अपनी कमी को रियलाईज करे।

प्रश्नः- निश्चिंत रहने के लिए क्या धारणा हो?
उत्तरः- ड्रामा। ड्रामा का ज्ञान हो, रियलाईजेशन हो।

प्रश्न:- कर्मातीत की निशानी क्या है?
उत्तर:- सबसे राजी। सबसे खुश।

प्रश्न:- वर्तमान समय ब्राह्मणों की स्थिति क्या होनी चाहिए?
उत्तर:- पक्के योगी।

प्रश्न:- वापिस घर जाने के लिए क्या करे?
उत्तर:- नष्टोमोहा बने। इसमें सब आ गया।

प्रश्न:- हमारे जीवन में पवित्रता, सत्यता, दिव्यता कैसे आयेगी?
उत्तर:- पवित्रता - कोई भी देह-अभिमान वाले से लगाव नहीं। सत्यता - कभी भी झूठ नहीं बोलो, हेराफेरी नहीं, सच्चा हो। दिव्यता - कोई भी देहधारी से अटैचमेन्ट न हो। सभी से बहुत प्यार हो। कोई देहभान का नशा नहीं चाहिए।

प्रश्न:- कोई प्यार से न माने तो क्या करे?
उत्तर:- तुम्हारा फर्ज है उनको समझाना, वह माने या न माने यह उनका हिसाब है।

प्रश्न:- छोटों का बड़ों से व्यवहार कैसा हो?
उत्तर:- बड़ी बहन माँ समान होती है। सहयोग न मिले तो शान्त रहे।

प्रश्न:- किसी आत्मा को योगबल से कैसे परिवर्तन करे?
उत्तर:- उनके लिए शुभभावना का संकल्प हो। यह भी मम्मा-बाबा जैसा बनना है।

प्रश्न:- व्यहवार कुशलता किसे कहेंगे?
उत्तर:- अच्छा व्यवहार। अच्छा माना जिससे सभी को खुशी मिले, प्यार मिले।

प्रश्नः- योग से विकर्म कैसे विनाश होते हैं?

उत्तरः- जो संकल्प चलाते वो बाबा की याद का हो, प्यार का हो तो जो पिछले विकर्म है वो भस्म हो जायेगा।

प्रश्नः- हमारा पुरुषार्थ क्या हो?

उत्तरः- सम्पन्न बनना है कोई गलती नहीं हो, कोई देह-अभिमान न हो।

प्रश्नः- गलतियाँ क्यों होती है?

उत्तरः- देह-अभिमान के कारण। उसे मिटाने के लिए देही-अभिमानी बनना है।

प्रश्नः- पास विद् ऑनर बनने के लिए क्या करना है?

उत्तरः- सभी गुणों में पास बनना है। एक बाप को प्यार से याद करो।

प्रश्नः- ज्ञान मार्ग में चलते क्या ध्यान रखें?

उत्तरः- प्रेम और शान्ति की मूर्ति रहे।

प्रश्नः- नौकरी करने वाले अपनी तनखाह कैसे बांटे?

उत्तरः- एक हिस्सा - लौकिक, एक हिस्सा - बाबा, एक हिस्सा - बैंक।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414007497, +919414150607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com